

# समाचार दर्पण 24

प्रधान संपादक

हिंदी साप्ताहिक

अनिल अनुप

कार्यकारी संपादक मोहन द्विवेदी वरिष्ठ उप संपादक संजय सिंह राणा संवाद व्यवस्था चुन्नीलाल प्रधान समाचार संपादक अंजनी कुमार त्रिपाठी राजस्थान ब्यूरो सुरेन्द्र प्रताप सिंह टीम सहयोगी

टिक्कू आपचे, रामनरेश चौरसिया, सुमन कश्मीरी, राधेश्याम पुरवैया, सीता देवी, शगुन सिंह, उर्मिला थापर, आर के मिश्रा

कार्यालय संवाददाता पवन सिंह, सुखविंदर सिंह, सीमा यादव, रेखा गुप्ता प्रबंध उप संपादक दुर्गा प्रसाद शुक्ला लेखकीय सलाहकार प्रमोद दीक्षित मलय कला संपादक मनमोहन उपाध्याय संवाद सहयोगी

इरफान अली (देवरिया), प्रशांत झा(बिहार), अब्दुल मोबीन सिद्दीकी (यूपी), राम अवतार जांगिड़ (राजस्थान), विरेन्द्र हरखानी (जोधपुर) शंकर यादव (छत्तीसगढ़), मिश्रीलाल कोरी (नेपाल), हरिंदर सिंह (मध्य प्रदेश), परिमल(गुवाहाटी), मनोज उनियाल (हिमाचल), अरमान असी (जम्मू कश्मीर), राकेश सूद (पंजाब), ईसम सिंह (हरियाणा), इरफान (महाराष्ट्र), ममता कटारिया (गुजरात), गुफरान (कतर), सचिन बहलोल(बहरीन),

विजापन प्रभारी

सर्वेश दिवेदी

विशेष संवाददाता राकेश तिवारी

> कार्यालय मूफिया चौक लुधियाना पंजाब

संपर्क -8264173026

97922 62533

#### समाचार दर्पण २४डॉट कॉम का शानदार चौथे वर्ष में प्रवेश

मैं इस न्यूज़ पोर्टल से शुरुआती दौर से ही जुड़ा हूँ। इसके प्रधान संपादक अनिल अनूप जी मेरे गार्जियन की तरह लगते हैं। इनका सुझाव मार्गदर्शन हमेशा मिलते रहता है। यह न्यूज़ पोर्टल कम दिनों में अच्छा खासा ख्याति प्राप्त किया है। उम्मीद है आगे आने वाले दिनों में यह न्यूज पोर्टल देश विदेश में और अधिक चर्चित होगा।

यह न्यूज़ पोर्टल हर तरह के खबरों के साथ 24 घंटे अपडेट होते रहता है जो बधाई के पात्र हैं। इससे जुड़े तमाम सभी लोग जिनका योगदान इस न्यूज पोर्टल को आगे बढ़ाने में है, मैं उन्हें भी बधाई देता हूं।

इस न्यूज़ पोर्टल से जुड़ने के बाद मैं स्वयं तो इस क्षेत्र का खास ख़बर भेजता ही हूँ।मुझे भी इस न्यूज पोर्टल के माध्यम से लगातार देश के कोने कोने से जुड़े लोगों द्वारा भेजे गए ख़बर को पढ़ने का मौका मिलता है।

जो भी संवाददाता न्यूज़ भेजते हैं और अगर उसमें कुछ त्रुटि भी रहती है तो प्रधान संपादक जी का सुझाव भी आता है। मैं एक हिन्दी दैनिक में एक संवाददाता के पद पर कार्य करता हूँ। परन्तु चार वर्षों में इस न्यूज पोर्टल से मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका भी मिला है। इस न्यूज़ पोर्टल के प्रधान संपादक महोदय ने विगत वर्ष अपने पत्रकारों को सम्मानित करने का कार्य किया जो सराहनीय कदम है। मैं इस न्यूज़ पोर्टल से भावनात्मक रूप से जुड़ा हूँ। मैं हमेशा इस न्यूज पोर्टल को आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्पित हूँ।

शुभकामनाओं के साथ..।



वीरेंद्र कुमार खत्री, पत्रकार, हसपुरा, औरंगाबाद, बिहार आज समाचार दर्पण 24 अपने चौथे वर्ष में प्रवेश कर गया है, यह इस बात का प्रमाण है कि तन्मयता से और ईमानदारी से किए गए कार्य को भगवान भी सराहना करता है। नित नए प्रयोग और नये सूत्रों का नियंता तो यह बनता जा रहा है साथ ही देश दुनिया को घर घर पंहुचा सकने में समाचार दर्पण 24 टीम के हरेक सहयोगी भी बधाई और साधुवाद के पात्र हैं।

नयना शर्मा, दोहा कतर, सऊदी अरब

अनिल अनूप जी की लगनशील प्रवृत्ति और उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का निरंतर छाप छोड़ते हुए समाचार दर्पण 24 के चौथे वर्ष में प्रवेश करने पर मेरी ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं।

#### आलोक मेहता, आउटलुक हिंदी मैगजीन

समाचार दर्पण 24 परिवार को शानदार चौथे वर्ष में प्रवेश करने पर मेरी शुभकामनाएं।

समाचार दर्पण 24 हरेक दृष्टि से हिंदी पत्रकारिता जगत में एक माइल स्टोन साबित हो सकता है ऐसा हमारा विश्वास है। इसके चौथे वर्ष में प्रवेश करने पर मेरी दिल से शुभकामनाएं।

रीतिका खेड़ा, स्तंभकार





# विज्ञापन



# समाचार दपण 24

बहुरंगी सामाजिक पारिवारिक और बहुआयामी

हम सिर्फ लिखते नहीं, प्रेरित भी करते हैं

प्रयास करते हैं नई प्रतिभाओं को

पत्रिका आपको इतिहास, संस्कृति और





विरेन्द खत्री



हर अंगलवार आपके घर जिल सकता है ये अनमित



र बेकाफ लेखक भी समयित है पंजय सिंह राणा



साहित्य के ऐसे दीवाने भी हैं प्रमोद दीक्षित मलय



यग और संघर्ष करने



शिक्षाविद जुनूनी लेखक भी हैं हमारे सा



क्षमता को वेस्तार देने वाले

केवल कृष्ण पनगोत्रा

अपने घर पर ही मंगवा कर पढ़िए

फोन करें-8264173026/97922 62533

उपर अंकित नंबर पर अभी संपर्क करें 👇



हिंदी साप्ताहिक पत्रिका समाचार दर्पण 24

# विशेष संपादकीय



जज्बा, जोश और समर्पण के बल पर आगे बढ़ते हुए हम आज अपने चौथे वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। आज आपके प्यार, सम्मान और विश्वास ने हमें यह सुअवसर प्रदान किया है। चारों ओर कुत्सित मानसिकता के प्रदूषण से घिरे हुए रहने के बावजूद हमने अपने सजग और सचेत पाठकों को अपने से जोड़े रखा और निरंतर पत्रकारिता की मर्यादा को कायम रखते हुए आगे बढ़ते रहे वह हम अपने पूरे विनम्र भाव से अपनी सशक्त टीम के साथ

आप पाठकों को समर्पित कर रहे हैं। आज वैबसाइटों की कुकुरमुत्ते की तरह उग आई भीड़ में भी हम अलग थलग दिख रहे हैं ये आप पाठकों का ही आशीष है और हम फिर से वादा करना चाहते हैं कि आपका यह विश्वास आगे भी मजबूत करने में कोई

कसर नहीं छोडेंगे।

इस सफर में बहुत ज्यादा उतार चढ़ाव से गुजरना हमें और मजबूत करने में सहायक सिद्ध हुआ है। समाचार दर्पण 24 के साथ रज मिल कर पत्रकारिता की शुरुआत करने वाले बहुतेरे लोग आए जो आज स्वघोषित वरिष्ठ पत्रकार कहलाने की जद्दोजहद में लगे हैं लेकिन हमने अपने मकसद और सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। हमारे साथ आज वही लोग रह गए हैं जिनमें लगन और इमानदारी भरी हुई है और समर्पण भाव तो उनका ऐसा

है कि आज उसका परिणाम आपके सामने है। भारत के सोलह राज्यों में कुल मिलाकर एक सौ उन्नीस और भारत से बाहर सात देशों में हमारे सहयोगी बने हुए लोगों ने इसे बारह लाख पाठकों तक दैनिक पंहचा दिया।

हम आपको विश्वास दिलाना चाहते हैं कि आपके प्यार को पाकर हमने जो गति पाई है उसमें किसी भी तरह से

कोई कमी नहीं आने दी जाएगी।

-अनिल अनुप

# दरकते पहाड़ और सहमी हुई जिंदगी...



-रश्मि प्रभा

जोशीमठ के लोग विस्थापन की मांग कर रहे हैं। फिलहाल सरकार की ओर से प्रति प्रभावित परिवार डेढ़ लाख रुपये की अहेतुक धनराशि देने का प्रावधान किया गया है। इसमें से पचास हजार रुपये प्रभावित परिवार के सुरक्षित ठिकानों तक सामान परिवहन आदि के लिए व एक लाख रुपये उनके आवास जमीन आदि के अग्रिम मुआवजे के रूप में दिये जाने का निर्णय लिया गया है।

पहाड़, पेड़, जल, जंगल, जलवायु बचाने के लिए जहां से अस्सी के दशक में चिपको जैसा बेमिसाल आंदोलन शुरू हुआ था, आज वही कस्बा जोशीमठ उन्हीं वजहों से अंतिम सांस ले रहा है जिनके खिलाफ कुछ दूरंदेश संवेदनशील लोगों ने अनोखे असहयोग की नींव रखी थी। दरक रहे पहाड़ मानो कह रहे हैं, अब और खड़ा नहीं हुआ जाता! पहाड़ के बैठने या जमीन धंसने का सिलसिला इधर कुछ समय से इस कदर तेज हुआ है, मानो कह रहा हो कि इंतिहा हो गई। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के नेशनल रिमोट सेंसिंग सेंटर (एनआरसी) की शुरुआती रिपोर्ट के मुताबिक जोशीमठ कस्बे के इलाके अप्रैल 2022 से सात महीनों में 9 सेंटीमीटर और 27 दिसंबर से सिर्फ 12 दिनों में 5 सेंटीमीटर धंस चुके हैं। सरकार की आपत्ति के बाद फौरन इस रिपोर्ट को वेबसाइट से हटा लिया गया और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) ने सभी सरकारी संगठनों पर ऐसी कोई रिपोर्ट सार्वजनिक करने और मीडिया से बात करने पर पाबंदी जड दी। दलील यह है कि लोगों में दहशत न फैले और शायद मंशा आपदा की वजहों पर परदा डालना हो, लेकिन हकीकत भयावह है। एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी अखबार ने सुत्रों के हवाले से बताया कि हालिया विशेषज्ञों के मौका मुआयना और जांच रिपोर्ट के मुताबिक जोशीमठ के कुछ इलाके 2.2 फुट (70 सेंटीमीटर) तक धंस चुके हैं। शहर के लगभग 700 भवनों में दरारें पड़ चुकी हैं और इन भवनों को रहने हेतु अयोग्य घोषित किया जा चुका है। भवनों में दरार पड़ने का सिलसिला थमा नहीं है बल्कि लगातार बढ़ता जा रहा है। कस्बे की सड़कों में दरारें पड़ चुकी हैं। कई जगहों पर पड़ी दरारों से पानी की मोटी धार निकल रही है।

ऐसा नहीं है कि जोशीमठ पर भू-धंसाव या दरकने का सिलसिला अचानक हुआ हो। पिछले 14 महीनों से मकानों में दरारें देख जोशीमठ के लोग किसी अनहोनी की आशंका व्यक्त कर रहे थे, लेकिन सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंगी। अब जोशीमठ के अधिकतर भवनों में दरारें तेजी से चौड़ी होने लगीं तो लोग सड़कों पर उतर आए, तब सरकार हरकत में आई। जोशीमठ के लोगों का मानना है कि पनबिजली परियोजनाओं की मनमानी और अंधाधुंध निर्माण और जमीन के अंदर बनाई जा रही सुरंगों के लिए किए जा रहे विस्फोटों की परिणित ही है कि कस्बे की धरती इस कदर खिसकने और दरकने लगी है। सरकार ने भू-गर्भीय सर्वेक्षण भी कराया है, लेकिन पनबिजली परियोजनाओं का निर्माण बदस्तूर चलता रहा।

गढ़वाल के मंडल आयुक्त रहे महेश चंद्र मिश्रा की अध्यक्षता में 1976 में गठित एक समिति की रिपोर्ट में स्पष्ट कहा गया था कि जोशीमठ कस्बा भूगर्भीय दृष्टि से बड़े निर्माण के लिए सही नहीं है। तब तो परियोजनाएं रोक दी गईं लेकिन बाद की सरकारों ने बडी-बडी जलविद्युत परियोजनाओं की संस्तुति दी। मौजूदा सरकारों के दौरान इसमें काफी तेजी आ गई। इसके बाद वाडिया इंस्टीट्यूट की प्रोफेसर स्नपनमिता का एक शोध भी सामने आया। इसमें कहा गया था कि अलखनंदा नदी से हो रहा कटान जोशीमठ के लिए घातक है। यहां निर्माण कार्यों से जमीन में धंसाव हो रहा है। इसके बाद 2014 में सुप्रीम कोर्ट की विशेषज्ञ समिति ने भी जोशीमठ के बारे में एक रिपोर्ट दी। उसमें कहा गया था कि यह शहर मेन सेंट्रल थ्रस्ट के ऊपर बसा है। इसे बांध परियोजनाओं से मुक्त रखा जाना चाहिए। वनों के कटान, सुरंगों के निर्माण की वजह से इस क्षेत्र का हाइड्डो जिआलॉजिकल प्रभाव का अध्ययन करने की जरूरत पिछले साल जुलाई में एसपी सती, डॉ. नवीन जुयाल, प्रो. वाइपी सुंदरियाल और डॉ. शुभ्रा का एक शोध पत्र भी सामने आया था जिसमें कहा गया था कि जोशीमठ से एक किलोमीटर नीचे विष्णुगढ़ परियोजना की टनल मुश्किलें खड़ी कर सकती है। वैज्ञानिक एमपीएस बिष्ट और आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के डॉ. पीयूष रौतेला ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि जलविद्युत परियोजना की टनल में फंसी बोरिंग मशीन की वजह से पानी का रिसाव बढ़ रहा है। अगस्त 2022 में पीयूष रौतेला ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि अलखनंदा कटान कर रही है। जोशीमठ शहर में सीवेज और ड्रेनेज सिस्टम नहीं होने की वजह से पानी जमीन में जा रहा है और इसी वजह से जमीन धंस रही है। इन तमाम रिपोर्ट्स और शोध पत्रों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया।

जोशीमठ ग्लेशियर द्वारा लाई गई मिट्टी पर बसा शहर है और भूगर्भीय रूप से अतिसंवेदनशील जोन-5 के अंतर्गत आता है। शहर के नीचे से एनटीपीसी की तपोवन विष्णुगढ़ परियोजना की सुरंग निर्माणाधीन है। पहाड़ों में लगातार घूम कर उसकी प्रकृति को नजदीक से देखने वाले चिंतक रतन सिंह असवाल कहते हैं कि 1996 में जोशीमठ क्षेत्र में भ्रमण के दौरान उन्होंने पाया कि हेलंग से लेकर मारवाडी तक के क्षेत्र में जमीन में दरारें पड़ी हुई थीं। जोशीमठ कस्बा प्राचीन भूवैज्ञानिक काल खंड में भूस्खलन से आई मिट्टी पर बसा है। इस क्षेत्र में लाइम स्टोन, डोलोमाइट और सोपस्टोन जैसे खनिज की चट्टानें पाई जाती हैं। सोपस्टोन घुलनशील व क्ले पार्टिकल से बना होता है वहीं लाइमस्टोन व डोलोमाइट कैल्शियम प्रधान चट्टानें हैं जो घुलनशील मानी जा सकती हैं। पानी के संपर्क में आने पर ये क्ले पार्टिकल व कैल्शियम घुल कर अपना स्थान छोड़कर पानी के साथ बह जाते हैं उनके स्थान को भरने के लिए दूसरे कण शिफ्ट होते हैं। यही दरारों के पड़ने की प्रक्रिया है। इसके अलावा अनियंत्रित एवं अवैज्ञानिक निर्माण कार्यों की बाढ के कारण निर्मित कंक्रीट के जंगल एक कारक हैं। एक बिंदु और है कि वृहद निर्माण परियोजनाएं, निर्माण के दौरान प्रयोग की जा रही भारी मशीनें, विस्फोटक तथा उत्खनन भी इसके लिए अवश्य ही जिम्मेदार हैं। इन कारणों से आज जोशीमठ शहर की यह स्थिति हो गई है कि सनातन धर्म के एक प्रमुख मठ का परिचालक, एक सभ्यता, एक संस्कृति आज समाप्ति के कगार पर है।

जोशीमठ संघर्ष समिति की अगुआई कर रहे सामाजिक कार्यकर्ता अतुल सती कहते हैं कि कहानी तो तभी शुरू हो गई थी जब परियोजना और बेतरतीब निर्माण का मॉडल खड़ा किया गया था, "हम बोलते रहे, लिखते रहे, पर सरकारों ने ध्यान नहीं दिया।" हलद्वानी में रेलवे की जमीन पर कथित रूप से बसा बनभूलपुरा क्षेत्र लगातार सुर्खियों में है। हाईकोर्ट ने यहां बने 4365 मकानों में बसे लोगों को हटाने के आदेश दिए थे। प्रशासन ने वहां लोगों को बलपूर्वक हटाने की पूरी तैयारियां भी कर ली थीं, लेकिन इसी बीच सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट का आदेश स्थगित कर दिया। फिलवक्त तो इन लोगों के सिर से छत हटने का खतरा टल गया है। अब सर्वोच्च अदालत में फरवरी में सुनवाई होगी।

रेलवे ने अपनी लाइन से पंद्रह मीटर तक सीमांकन करते हुए करीब दो किलोमीटर तक अपने खंबे लगाए जिसके बाद से बनभूलपुरा क्षेत्र में बवाल उठना शुरू हो गया। लोग सड़कों पर आ गए। रेलवे ने इन लोगों को हटाने के लिए जिला प्रशासन को 23 करोड़ रुपये भी दे दिए। जिला प्रशासन ने 10 जनवरी को उन्हें बलपूर्वक हटाने का फरमान जारी कर दिया। इसके विरोध में कांग्रेसी नेताओं और अन्य लोगों ने सुप्रीम कोर्ट में पीआइएल दाखिल की थी।

गौरतलब है कि हलद्वानी स्टेशन की दूसरी तरफ रेलवे पटरी के उस पार गौला नदी बहती है। इसमें से रेता, बजरी, पत्थर का चुगान होता है। अंग्रेजी शासनकाल से लेकर सत्तर के दशक तक रेलवे अपनी नई-पुरानी परियोजनाओं के लिए पत्थर तुड़वा कर गिट्टी को इस नदी से लेता रहा था। पत्थर तोड़ने का ठेका लेने वाले ठेकेदार पड़ोसी जनपद रामपुर और मुरादाबाद से सैकड़ों की संख्या में मुस्लिम मजदूर लेकर आए। ये मजदूर यहीं रेल पटरी किनारे झोपड़ी डाल कर बस गए। अब जाकर रेलवे को होश आया कि ये तो उसकी जमीन पर बसे हुए अतिक्रमणकारी हैं।

उत्तराखंड सरकार ने अपनी कागजी कार्रवाई भी शुरू कर दी है। जिला प्रशासन ने यहां वर्षों से काबिज उन लोगों को अपनी जमीन के कागजात की छायाप्रति हलद्वानी के एसडीएम कार्यालय में देने को कहा है, जो ये दावा करते हैं कि उनके पास लीज के दस्तावेज हैं या फिर उनका मालिकाना हक है। दरअसल, रेलवे का दावा सबसे पहले करीब 29 एकड़ में बसे 4365 परिवारों को लेकर है। स्टेशन से और उससे आगे करीब दो किलोमीटर मंडी तक जो लोग काबिज हैं, वे यह दावा करते हैं कि यह जमीन उनकी है और उनके पास कागज या पट्टा है। रेलवे कुल 78 एकड़ जमीन पर अपनी हद बता रहा है।

# नई सरकार का टिके रहना सकारात्मक होगा लेकिन प्रचंड की छवि से भविष्य पर सवाल



नेपाल में पुष्प कमल दहाल (प्रचंड) ने 26 दिसम्बर को प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। अपनी प्रकृति के अनुरूप हर बार की तरह फिर उन्होंने सारे अनुमानों को गलत साबित करते हुए केपी ओली से हाथ मिला लिया जिसके साथ पिछले दो वर्षों से उनका शीत युद्ध चल रहा था और शेर बहादुर देउबा का साथ छोड़ दिया जिसके साथ मिल कर उन्होंने पाँच पार्टियों का मोर्चा बनाया था और चुनाव लड़ा था।

2008 में राजतंत्र की समाप्ति के बाद प्रचंड तीसरी बार प्रधानमंत्री बने हैं। केपी ओली तीन बार और देउबा पाँच बार प्रधानमंत्री रह चुके हैं। अगर प्रचंड ने 'धोखा' नहीं दिया होता तो देउबा को छठी बार इस पद को सुशोभित करने का अवसर मिलता। प्रसंगवश यह बताना दिलचस्प होगा कि जनता की समस्याओं से आंखें मूंदे 'कुर्सी दौड़' में लगे नेताओं से क्षुडध हो कर इस बार चुनाव के मौके पर युवकों के एक समूह ने सोशल मीडिया पर #NoNotAgain अभियान चलाया और यह अभियान इतना व्यापक हो गया कि नेपाल के मुख्य चुनाव आयुक्त को एक चेतावनी जारी करनी पड़ी कि अगर सोशल मीडिया पर नेताओं के खिलाफ नकारात्मक टिप्पणी करता कोई पाया जाएगा तो उसे एक लाख रुपये का जुर्माना या पाँच वर्ष की सजा या दोनों भुगतना होगा। इससे पता चलता है कि नेपाल की जनता में इस बार चुनाव को लेकर बहुत हताशा थी।

इस चुनाव में कुछ सर्वथा नई पार्टियों ने अच्छा प्रदर्शन किया। चुनाव से महज कुछ ही माह पूर्व जुलाई 2022 में स्थापित 'राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी' को 20 सीटें, जनवरी 2022 में स्थापित 'पीपुल्स फ्रीडम पार्टी' को चार सीटें और 2019 में स्थापित 'जनमत पार्टी' को छह सीटें मिली हैं। राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के अध्यक्ष रिब लिमछाने पहले एक टेलीविजन चैनल में लोकप्रिय ऐंकर थे और उन्हें अब प्रचंड ने अपने मंत्रिमंडल में उपप्रधानमंत्री और गृह मंत्री का पद सौंपा है।

#### -मिश्रीलाल कोरी

सितंबर 2015 में नेपाल का संविधान बना और संविधान बनने के दूसरे ही दिन से आर्थिक नाकाबंदी शुरू हो गई। नए संविधान के कुछ प्रावधानों से भारत खुश नहीं था और संविधान निर्माण की प्रक्रिया के दौरान भारत की दखलंदाजी पर नेपाल के कम्युनिस्ट नेताओं ने सार्वजनिक तौर पर आपत्ति की थी। उसी वर्ष अक्टूबर में केपी ओली प्रधानमंत्री बने और फरवरी 2016 तक उनको इस नाकाबंदी से जुझना पडा। केपी ओली की सरकार माओवादियों के समर्थन से बनी थी और जैसे ही माओवादी नेता प्रचंड ने जुलाई 2016 में समर्थन वापस लेने की घोषणा की, उनकी सरकार गिर गई। प्रचंड ने नेपाली कांग्रेस के समर्थन से सरकार बनाई, प्रधानमंत्री भी बन गए लेकिन उनके इस कदम को नेपाली जनता ने पसंद नहीं किया और सब ने यह आशंका व्यक्त की कि प्रचंड ने भारत के इशारे पर ओली की सरकार गिराई-वह भी ऐसे समय जब प्रधानमंत्री के रूप में केपी ओली भारत की दादागिरी का मुकाबला कर रहे थे। इस घटना के बाद नेपाल में बहुत कुछ हुआ।

माओवादी नेता प्रचंड और नेपाली कांग्रेस के नेता शेर बहाद्र देउबा ने बारी-बारी प्रधानमंत्री का पद संभाला और सत्ता संचालन किया। नए संविधान के तहत नवगठित राज्यों के चुनाव सफलतापूर्वक हुए। फिर एक अप्रत्याशित घटना हुई- केपी ओली की पार्टी नेकपा (एमाले) और प्रचंड की पार्टी नेकपा (माओवादी केंद्र) ने मिलजुल कर चुनाव में हिस्सा लिया। चुनाव में इस गठजोड को अप्रत्याशित सफलता मिली। भारत के सत्ताधारी वर्ग की परंपरागत रूप से पसंदीदा पार्टी नेपाली कांग्रेस हाशिये पर चली गई और इन दोनों वामपंथी पार्टियों की एकता ने कम्युनिस्टों को नवगठित संसद में दो-तिहाई के करीब पहुंचा दिया। चुनाव से पहले हुए एक समझौते के तहत फरवरी 2018 में केपी ओली एक बार फिर प्रधानमंत्री पद पर आसीन हुए। इसके कुछ ही समय बाद मई 2018 में दोनों पार्टियों का विलय हो गया और नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (एनसीपी) के नाम से एक नई पार्टी का उदय हुआ। नेपाल की जनता को ऐसा महसूस हुआ कि एक बार फिर देश की राजनीति में कम्युनिस्टों का वर्चस्व स्थापित हो गया है।

लेकिन उनका यह हर्षोन्माद बहुत दिनों तक नहीं टिक सका। 2020 आते–आते प्रचंड और ओली के बीच अनेक मुद्दों को लेकर तनाव काफी बढ़ गया जिसकी परिणित पार्टियों के अलग होने में हुई। एक अदालती निर्णय के तहत केपी ओली के पास उनकी पार्टी नेकपा (एमाले) और प्रचंड के पास उनकी पार्टी नेकपा (माओवादी केंद्र) वापस चली गई। बेशक, नेकपा (एमाले) से उसके कुछ प्रमुख नेता ओली की नीतियों का विरोध करते हुए अलग हुए जिनमें दो पूर्व प्रधानमंत्री माधव नेपाल और झलनाथ खनाल भी थे। माधव नेपाल ने नेकपा (एकीकृत समाजवादी) नाम से एक अलग पार्टी बना ली। अब केपी ओली की सरकार अल्पमत में आ गई थी लिहाजा उसे जाना पड़ा और उसकी जगह ले ली शेर बहादुर देउबा की सरकार ने, जो पांच पार्टियों का गठजोड़ थी।

जिन दिनों नाकाबंदी चल रही थी केपी ओली ने चीन के साथ कुछ समझौते किए थे तािक जरूरी सामानों की आपूर्ति में भारत की ओर से जो रुकावट पैदा की गई है उसका समाधान ढूंढा जाए। नाकाबंदी की घटना ने ओली को सचमुच भारत के विरुद्ध खड़ा कर दिया था। ऐसी स्थिति में ओली का प्रधानमंत्री पद पर चुना जाना भारत सरकार के लिए बहुत सुखद नहीं था। अप्रैल 2018 में केपी ओली जब भारत सरकार के निमंत्रण पर प्रधानमंत्री की हैसियत से दिल्ली आए थे, तब यात्रा से महज चार दिन पहले उनके विदेश मंत्री प्रदीप ज्ञवाली ने पत्रकारों से बातचीत में नाकाबंदी के दिनों को याद करते हुए कहा था, 'उस समय हमने जो रुख अख्तियार किया उस पर हमें गर्व है'। उनका आशय भारत के सामने न झुकने से था। चीन की ओर खुलकर मुखातिब होने का भी वही दौर था।

पिछले कुछ वर्षों के दौरान चीन का नेपाल की बहुत सारी परियोजनाओं में जबर्दस्त निवेश हुआ है। बेल्ट ऐंड रोड इनीशिएटिव (बीआरआइ) के जरिये चीन ने नेपाल के इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास की भी अच्छी-खासी योजना तैयार की है। संभवत: चीन के ही आश्वासन के आधार पर 2018 में केपी ओली ने अगले पांच साल का जो कार्यक्रम तैयार किया उसके अनुसार ईस्ट वेस्ट हाईवे के समानांतर रेल लाइन बिछाना, रसुवागढ़ी से लेकर लुंबिनी तक रेल व्यवस्था तैयार करना, काठमांडो के चारों तरफ रिंग रोड को मेट्रो रेल व्यवस्था से संपन्न करना और परिवहन के क्षेत्र में नेपाल में एक क्रांति लाना है। हाइड्रोइलेक्ट्रिक के क्षेत्र में भी उन्होंने अनेक परियोजनाएं शुरू कीं। ओली ने प्रधानमंत्री रहते हुए चीन के साथ एक 'ट्रांजिट ऐंड ट्रांस्पोर्टेशन एग्रीमेंट' किया गया था। इससे नेपाल को चीन के समुद्री एवं थल बंदरगाहों तक जाने की सुविधा मिल जाती है जिससे भू-आवेष्ठित नेपाल की भारत पर निर्भरता कम होगी।

मौजूदा चुनाव में देउबा के सत्तारूढ़ गठबंधन को 136 सीटें मिली हैं। 275 सदस्यों की प्रतिनिधि सभा में बहुमत के लिए कुल 138 सीटों की जरूरत <mark>होती है। गठबंधन के पास</mark> दो सीटें कम थीं। गठबंधन की सबसे बड़ी पार्टी नेपाली कांग्रेस के <mark>पास 89 और प्रचंड की नेकपा माओवादी केंद्र के</mark> <mark>पास महज 32 सीटें हैं। इसके अलावा नेकपा</mark> (एकीकृत समाजवादी) के पास 10, लोकतांत्रिक <mark>समाजवादी पार्टी के पास चार और राष्ट्रीय जन</mark> मोर्चा पार्टी के पास एक सीट है। इन सब का योग <mark>136 होता है। इस बात पर तो मौखिक रूप से एक</mark> <mark>सहमति बन गई थी कि देउबा औ</mark>र प्रचंड ढाई–ढाई साल के लिए प्रधानमंत्री रहेंगे लेकिन पहले इस पद <mark>को कौन संभालेगा, इस पर गतिरोध बना रहा।</mark> <mark>इसकी परिणति प्रचंड के मोर्चे से</mark> अलग हो कर केपी <mark>ओली के खेमे में चले जाने के रू</mark>प में हुई। कम से कम सतह पर तो यही दिखाई दे रहा है।

लेकिन मामला इतना आसान नहीं है। 2015 के बाद से ही जब से भारत ने नेपाल के खिलाफ आर्थिक नाकाबंदी लगाई, चीन की सक्रियता बढ़ती चली गई। नेपाली राजनीतिक प्रेक्षकों और मीडिया का मानना है कि 2018 में भी दोनों पार्टियों को एक साथ लाने में चीन की महत्वपूर्ण भूमिका थी। 2020 में जब प्रचंड और केपी ओली के बीच मतभेद काफी तीखा हो गया उस समय भी नेपाल स्थित चीनी राजदूत ने काफी हद तक खुले तौर पर दोनों नेताओं के बीच एकता कराने की कोशिश की थी। दरअसल आर्थिक नाकाबंदी जैसा मूर्खतापूर्ण कदम उठाकर भारत ने नेपाल को चीन के काफी करीब पहुंचा दिया था।

इस पृष्ठभूमि में देखें तो भारत यही चाहता था कि उसकी परंपरागत पार्टी नेपाली कांग्रेस के नेतृत्व में सरकार का गठन हो। कांग्रेस गठबंधन में रहते हुए अगर किसी तरह प्रचंड प्रधानमंत्री बनते तो भी भारत उतना असहज नहीं महसूस करता जितना अभी केपी ओली के नेतृत्व वाले गठबंधन में प्रचंड के प्रधानमंत्री बनने से वह महसूस कर रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि 78 सीटों वाली नेकपा एमाले के सामने 32 सीटों वाली प्रचंड की पार्टी नेकपा (माओवादी केंद्र) क्या स्वतंत्र ढंग से काम कर पाएगी?

### जो अलग नहीं वही पिता....."रमेशचंद्र शाह की पिता पर कविता"

#### -सर्वेश द्विवेदी की प्रस्तुति

साहित्य में किसी भी पात्र का जन्म अकस्मात नहीं होता, और न ही वह महज कोरी कल्पना ही होता है। उसकी रचना में घटनाओं और पात्रों का जन्म और विकास होता है- जिसे वह कभी सौंधी और मुलायम गुलकंद की तरह पान पर उतार देता है। कुछ ठीक अभिव्यक्ति की छटपटाहट नजर आती है (किताब चाक पर समय, पृष्ठ 45) दीवार पर टिके तिकये पर तन कर बैठे, 2014 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और 2001 में 'व्यास सम्मान' से सम्मानित रमेशचंद्र शाह कहते हैं, "चलो पढ़कर सुनाता हूं अपने पिता के बारे में।" इसका शीर्षक है तुम्हारी कहानी।

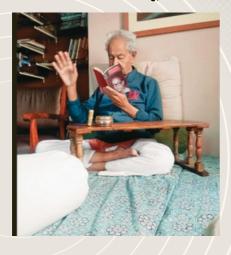
तुम्हारी कहानी
उस हुक्के की कहानी है
जो उस दिन दुकान की
एक ज्यादा ऊंची सीढ़ी पर
जल्दी में मेरे हाथ से छूट
चकनाचूर हो गया था
पर तुम्हारे लिए नहीं।
तुम्हारे लिए तो वो सिर्फ पांच टुकड़े थे
जिन्हें तुमने फौरन
एक तार की मदद से जोड़ के
फिर हुक्का बना लिया था।
तार भी तो आखिर वह
तुम्हारे ही सितार का
भूतपूर्व हिस्सा था।

सुमिः पिता वह सितार का एक तार जो कोई विद्रोही नहीं, वह दोस्त जो परिवार, समाज, व्यवस्था, तथाकथित मर्यादा – सबके प्रति विद्रोह नहीं करता है। वह तो बस परिवार, समाज, व्यवस्था को पूरी ईमानदारी से अपने जीवन के सुख-दुख से गुजरना चाहता है।

चाक पर समय को पढ़ते हुए वे आगे जोड़ते हुए कहते हैं यहीं इसी जगह तुमने सुमित्रानंदन पंत और गोविन्दवल्लभ पंत के बीच कि तार फर्क करना सिखाया था वह दोस्त तब भी बिलकुल इसी तरह यवस्था, खिलखिला रहा था हिमालय जब

तब भी बिलकुल इसी तरह खिलखिला रहा था हिमालय जब ते तुमने मुझसे कहा था 'कुछ चीजें अमर होती हैं कवियों के कारण जैसे हिमालय और दण्डकारण्य राम और कृष्ण...' और कवि कैसे बनते हैं ?' 'और कैसे बनते हैं? डाकू रत्नाकर कैसे वाल्मीकि बन गया! उतनी बड़ी चोट खाके कोई भी कवि बन जाए... पर वैसा कहां होता है? हर आदमी रत्नाकर नहीं होता।'

दरअसल पिता के बनने की कहानी, उनके अंतर्मन की विभिन्न परतों की कथा क्रम के जरिये की गई परिक्रमा ही तो पिता है। जो एक–दूसरे से अलग नहीं है, वह हम सब के जीवन का पिता ही तो है।



"रमेशचंद्र शाह "लेखक हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं।

# बिकनी किलर': फिर खुले जेल दरवाजे

-अंजनी कुमार त्रिपाठी



उसके लिए जेल के दरवाजे खुल गए। फर्क बस यह कि इस बार टूटे नहीं। कई किताबों, फिल्मों, टीवी धारावाहिकों का पसंदीदा विषय रहा, 'बिकिनी किलर' और 'सर्पेंट' जैसी उपाधियों से चर्चित कुख्यात अपराधी हतचंद भाओनानी गुरुमुख चार्ल्स शोभराज नेपाल की जेल से 19 साल बाद आजाद हो चुका है और अपने कथित देश फ्रांस में बीमारी की हालत में बुजुर्गियत काट रहा है। एक वक्त दहशत का पर्याय रहा, सिलसिलेवार वारदात को अंजाम देने वाला, चकमा देकर कई बार जेल से फरार हुए 78 वर्षीय शातिर चार्ल्स शोभराज की उम्र और जेल में अच्छे व्यवहार को देखते हुए 21 दिसंबर को नेपाल की सुप्रीम कोर्ट ने उसे रिहा करने का आदेश दिया। 1975 में दो पर्यटकों की हत्या के आरोप में चार्ल्स शोभराज सलाखों के पीछे था। भारतीय-वियतनामी मूल के फ्रांसीसी नागरिक शोभराज के साथ 1972 और 1982 के बीच हुई 20 से ज्यादा हत्याओं का लिंक भी जुड़ता है। फ्रांसीसी पर्यटकों को जहर देने के आरोप में वह भारत की एक जेल में भी 20 साल की कैद काट चुका है। अब उम्र के इस पड़ाव पर भले ही वह बीमारी से जूझ रहा है, लेकिन एक दौर ऐसा था जब भारत, फ्रांस, ग्रीस, थाईलैंड, मलेशिया समेत कई मुल्कों की एजेंसियां उसे पकड़ने के लिए अपना जोर लगा रही थीं।

नेपाली सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश सपना प्रधान मल्ला और तिल प्रसाद श्रेष्ठ की संयुक्त पीठ ने शोभराज की एक याचिका पर उसे रिहा करने फैसला सुनाया जिसमें उसने दावा किया था कि वह अपने लिए निर्धारित अविध से ज्यादा वक्त जेल में बिता चुका है। नेपाल में उन कैदियों को रिहा करने का कानूनी प्रावधान है, जो कारावास के दौरान अच्छे चाल-चलन के साथ सजा का 75 प्रतिशत हिस्सा जेल में काट चुके हों। शोभराज 1975 में नेपाल में अमेरिकी महिला कॉनी जो ब्रोंजिक की हत्या के सिलसिले में 2003 से काठमांडू की जेल में बंद था। नेपाल में उसे गिरफ्तार कर कई मुकदमे चलाए गए थे और 2004 के अगस्त में चार्ल्स शोभराज को आजीवन कारावास की सजा दी गई। नेपाली सुप्रीम कोर्ट ने भी 30 जुलाई, 2010 को उसकी इस सजा को बरकरार रखा था। उसे 2014 में कनाडाई पर्यटक लॉरेंट कैरियर की हत्या का भी दोषी ठहराया गया और दूसरे आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। नेपाल में उम्रकैद की सजा का अर्थ 20 साल की कैद होता है।

अपने जीवन का ज्यादातर समय जेल में बिताने वाला शोभराज कई किताबों, फिल्मों और टीवी कार्यक्रमों के लिए मुफीद विषय रहा है। उसके कारनामों और आकर्षक व्यक्तित्व की वजह से लोगों की उसमें गहरी दिलचस्पी रही है। चार्ल्स के वकील का कहना है कि पहली नजर में कोई नहीं कह सकता कि वह इतना बड़ा सीरियल किलर है। वह 19 साल काठमांडू में रहा मगर उसे हमेशा लिखते-पढ़ते देखा गया। वह अपराधी नहीं बल्कि बुद्धिजीवी जैसा व्यवहार करता था, हालांकि शोभराज ने अपने व्यक्तित्व के खतरनाक पहलू को लेकर एक बार खुद स्वीकार किया था, "मैं अपनी मर्जी से जेल से भाग सकता हूं। मैं अपनी मर्जी से

लूट सकता हूं। मैं जैसे चाहता हूं, वैसे जी सकता हूं।" शोभराज का शिकार बनी कई महिलाएं हत्या के वक्त बिकिनी पहने मिली थीं, इसलिए उसे 'बिकिनी किलर' और कई बार जेल से भागने में कामयाब रहने की वजह से 'सर्पेंट'उपनाम दिया गया। वह इतनी सफाई से अपराधों को अंजाम देता था कि किसी को उसकी भनक लगे, इससे पहले ही वह अपराध कर के निकल जाता था। इस तरह उसने अलग-अलग देशों में कई लोगों की हत्या की। चार्ल्स शोभराज का जन्म साल में सागोन (वियतनाम के हो ची मिन्ह सिटी) में हुआ था। चार्ल्स के पिता भारतीय मूल के थे और मां वियतनाम की थीं। माता-पिता के तलाक के बाद उसकी मां ने फ्रेंच लेफ्टिनेंट के साथ मिलकर चार्ल्स का पालन-पोषण किया था। माना जाता है कि अपने सौतेले भाई-बहनों के कारण माता-पिता की बेरुखी झेलने वाला शोभराज बचपन से ही कई छोटे-मोटे अपराधों को अंजाम देने लगा था। 1960 के दशक में चोरी और लूट जैसे अपराधों के लिए जब वह पेरिस में जेल में बंद था, उसी दौरान उसने एक धनी पारसी लड़की सी कोम्पैगनोन से विवाह करने का फैसला किया। यह उसकी पहली शादी थी। कई साल बाद उसने 2008 में नेपाल की जेल में अपने से 44 साल छोटी महिला तथा अपने नेपाली वकील की बेटी निहिता बिस्वास से शादी की।

1963 में पहली बार शोभराज को पेरिस में चोरी के अपराध के लिए सजा मिली थी। जेल से छटने के बाद उसने कई आपराधिक कृत्यों को अंजाम दिया। 1973 में उसे अलग-अलग अपराधों- होटल अशोका में जूलरी स्टोर डकैती के असफल प्रयास, पर्यटकों को लूटने, नशीला पदार्थ देकर हत्या आदि के लिए गिरफ्तार किया गया। वह अलग-अलग देश काबुल, ईरान, फ्रांस में घूमकर वारदातों को अंजाम देता रहा। चार्ल्स कई भाषाएं बोल सकता है। बताया जाता है कि शोभराज अपने आकर्षक व्यक्तित्व से विशेष तौर पर महिलाओं से दोस्ती करने में माहिर था। 1970 के दशक में उसने विदेशी पर्यटकों को अपना निशाना बनाना शुरू किया। वह उनका दोस्त बनकर उन्हें नशीली दवाएं देता और फिर उनकी हत्या कर देता था। विदेशी महिलाएं उसका मुख्य शिकार बनती थीं। उसकी शिकार अधिकतर महिलाओं ने इग्स या नशीली दवाओं का सेवन किया था और मौत से पहले उसके साथ निजी पल भी बिताए थे। सबसे पहले उसने अमेरिका की टेरेसा नोलटन का कत्ल किया था। उसके बाद उस पर दो अमेरिकी पर्यटकों की हत्या समेत 20 से ज्यादा हत्या, चोरी, डकैती वगैरह की कई धाराओं में मामले दर्ज किए गए थे।

शोभराज भारत की जेल में भी लंबा वक्त गुजार चुका है। उसे 1976 में अपने एक साथी के साथ मिलकर नई दिल्ली के एक होटल में इंजीनियरिंग के 30 से ज्यादा छात्रों को जहर देने के प्रयास करते समय गिरफ्तार किया गया था। बाद में पता चला कि उसने एक फ्रांसीसी पर्यटक की भी हत्या की है। कई अपराधों के लिए उसे तिहाड जेल में 12 साल कैद की सजा सुनाई गई, मगर 1986 में वह तिहाड़ जेल तोडकर भाग गया। एक महीने के भीतर ही गोवा के ओ कोकेरियो रेस्तरां से उसे फिर गिरफ्तार कर लिया गया और फिर वह 1997 तक कैद में रहा। माना जाता है कि शोभराज थाईलैंड को प्रत्यर्पित किए जाने से बचने के लिए जेल से भाग निकला था। दरअसल, उसे थाईलैंड के पटाया में एक समुद्र तट पर छह महिलाओं को नशीला पदार्थ देने और उनकी हत्या के मामले में मौत की सजा दी गई थी। दोबारा उसे पकडे जाने के बाद वापस उसे थाईलैंड भेजा जाता उससे पहले ही तिहाड़ में रहते हुए उसकी गिरफ्तारी के वारंट की अवधि खत्म हो गई थी।

वह ऐसा दौर था, जब किसी भी अपराध का नाम लो, उस गुनाह में चार्ल्स शोभराज का नाम लिपटा मिल जाता था। एक तरफ जहां वह जहर देकर हत्याओं को अंजाम देता था, वहीं पकडे जाने के बाद जेल तोडकर भागने में भी उसे महारत हासिल थी। भारत में तिहाड तोडकर भागने की उसकी कहानी मशहूर तो है ही लेकिन दुनिया भर में सबसे सुरक्षित समझी जाने वाली जेलों से भी वह यूं ही बाहर आ जाता था। 1971 में चार्ल्स शोभराज ग्रीस की रोड्स पुलिस स्टेशन की छत से कूद कर भाग निकला था। वहां से भागकर वह भारत आ गया। उसी साल चार्ल्स शोभराज को मुंबई में लूट और चोरी के आरोप में पुलिस ने धर दबोचा लेकिन उसने एपेंडिसाइटिस के दर्द का बहाना बनाया और अस्पताल में भर्ती हो गया। फिर वहां से पुलिस को चकमा देकर निकल भागा। वैसे ही 1972 में उसने अफगानिस्तान के काबुल की जेल में पहरेदार को नशीली चीज खिलाकर बेहोश कर दिया और वहां से भाग निकला। 1975 में ग्रीस की सबसे सुरक्षित मानी जाने वाली एजिना टापू की जेल से भी शोभराज आसानी से भाग निकला था।

फिलहाल दिल की बीमारी से जूझ रहा शोभराज फ्रांस में रह रहा है। बीते 24 दिसंबर को उसे यहां प्रत्यर्पित किया गया। शोभराज ने फ्रांसीसी समाचार एजेंसी एएफपी को बताया कि वह ब्रोंज़िच और कैरीयर की हत्या का दोषी नहीं था। उसने कहा, "मुझे बहुत कुछ करना है। मुझे बहुत से लोगों पर मुकदमा करना है।" अब शोभराज का अगला कदम क्या होगा, इस पर लोगों की निगाहें हैं।



### देश की इकलौती महिला शहनाई वादक बागेश्वरी कमर

#### -दुर्गा प्रसाद शुक्ला



26 जनवरी 1950 का वो दिन जब भारत गणतंत्र बना तब समारोह में बिस्मिल्लाह खान की शहनाई गूंज उठी थी। तब से लेकर आज तक इस साज की धुन हवाओं में है। देश 74वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। तो आज इस विशेष कॉलम में भारत रत्न से सम्मानित बिस्मिल्लाह खान की शिष्य और देश की इकलौती महिला शहनाई वादक बागेश्वरी कमर से मिलिए।

मैं छह-सात साल की थी तब मां चंद्रावती कमर से कहती कि मेरे लिए भी शहनाई बना दें, मैं भी बजाया करूंगी। जब पड़ोस के बच्चे गुड्डे-गुड़ियों के साथ खेलते थे तब मुझे शहनाई लुभाती थी। सुबह-शाम घर में पिता और उनके शिष्यों को अभ्यास करता देखती तो मेरा बहुत मन करता। एक दिन मां ने साज बनाकर दे ही दिया। मां सख्त निर्देश देतीं कि शहनाई तभी बजाना जब पापा घर पर न हों।

लेकिन पिता जी को पता चल गया। उन्होंने मना किया। उन्होंने कहा कि शहनाई महिलाओं का साज नहीं है। यह ऐसा साज है जो केवल पुरुष ही बजा सकते हैं क्योंकि इसमें बहुत दमखम की जरूरत होती है। जब पिता ने ये कहा तो मुझे यह बहुत चैलेंजिंग लगा और खुद से पूछा कि क्या मेरे अंदर वो दमखम नहीं है। मैं बजा सकती हूं ये मन में ठान लिया। मां को तो पता था लेकिन पिता से छुपाकर शहनाई बजाना शुरू किया।

इसके दो–तीन साल के बाद एक बार घर में रियाज कर रही थी तो पिता आ गए। मां से पूछा कि कौन बजा रहा है? मां ने बता दिया कि बब्बू (घर में इसी नाम से बुलाते थे) बजा रही है। पिता हैरत में पड़ गए। वो बोल पड़े, अरे बब्बू शहनाई बजा रही है! मेरे सुर और लय बिल्कुल स्पष्ट थे, वो भी बिना समुचित अभ्यास के। पापा ने कहा कि वैसे मैं इस पक्ष में नहीं हूं, पर बजाना चाहती ही हो तो कायदे से बजाओ।

1979 में जब उस्ताद बिस्मिल्लाह खान दिल्ली आए और पापा ने उन्हें मेरे शहनाई बजाने की बात बताई तो वो भी अचरज में पड़ गए। उन्होंने भी शहनाई बजाने का आशीर्वाद दिया।

पुरानी दिल्ली के सदर बाजार एरिया में ईदगाह रोड पर चंद्र कुटीर के आसपास के पूरे इलाके में तब शहनाई से ही लोगों के दिन की शुरुआत होती थी जिसे मंगल ध्विन कहते थे। पिछली तीन पीढ़ियों से मेरे घर में संगीत का माहौल रहा। मेरे दादा दीप चंद शहनाई वादक रहे। पिता पंडित जगदीश प्रसाद कमर प्रख्यात शहनाई वादक थे। वे उस्ताद बिस्मिल्लाह खान के सबसे प्रिय शागिर्द रहे। उन्हें राष्ट्रपति अवॉर्ड भी मिला था। चाचा भी शहनाई बजाते थे। तो शुरू से ही घर में म्यूजिक को देखा। पिता शायर भी थे तो उन्होंने तकल्लुफ़ लगाया था 'कमर'। इस तरह मेरे नाम के साथ भी 'कमर' जुड़ गया।



उस समय शहनाई को लकेर काफी ऐतराज था। जब तालीम लेना शुरू किया तो आस-पड़ोस के लोग और रिश्तेदार कहते कि लड़की को शहनाई नहीं बजाना चाहिए। रात में भी परफॉर्मेंस के लिए जाना होता है, यह लड़की के लिए ठीक नहीं है। लेकिन पिता ने किसी की नहीं सुनी। मुझे कहा कि पढ़ने-लिखने वाले तो कई होंगे लेकिन शहनाई बजाने वाली एक ही लड़की होगी बागेश्वरी। इस तरह पिता ने मेरा हौसला बढ़ाया। घर पर तालीम के समय डांट भी पड़ी, मार भी। मैंने 12वीं के बाद आगे पढ़ाई नहीं की और अपना पूरा जीवन शहनाई को समर्पित कर दिया।

कुछ समय तक घर पर तालीम लेने के बाद पिता ने मुझे उस्ताद बिस्मिल्लाह खान के पास बनारस भेजा। तब मेरी उम्र 11 साल थी। बनारस जाने से पहले दिल-दिमाग में खान साहब का ऐसा खौफ था कि पूछिए मत। सुन रखा था कि खान साहब बहुत गुस्सैल हैं। लेकिन उनकी मुझ पर असीम कृपा रही। उन्होंने मुझे काफी स्नेह दिया। बेटियों को लेकर वे संवेदनशील थे। मैं उनकी प्रिय शिष्या बनी।

जब बिस्मिल्लाह खान साहब के साथ रियाज होता तो कुछ पता नहीं होता था कि यह कितनी देर चलेगा। बैठ गए तो बैठ गए। दो-चार घंटे तो आम बात थी। गाने-बजाने के अलावा कोई बात नहीं होती थी। रियाज के दौरान उनकी तालीम चलती रहती थी। कभी-कभी हल्की-फुल्की डांट पड़ जाया करती थी। हम लोग अक्सर नीचे के दलान में रियाज करते थे। सब कुछ उनके बोलने पर होता था। साज लेकर बैठते थे। उनके घर के परिवार के लोग भी रहते थे। हम सब बैठते थे। कई बार अलग से भी रियाज होता था। रियाज का कोई टाइम-टेबल नहीं था। दिन-रात नहीं देखते थे। रेगुलर रियाज के साथ होठों का भी एक्सरसाइज होता था। शहनाई पर ग्रिप बनी रहे, इसके लिए नियमित रियाज होता था।

खान साहब ने मुझे हमेशा प्रोत्साहित किया। एक बार उन्होंने कहा कि लड़कों के साथ बागेश्वरी की जुगलबंदी कराएंगे। तब मैंने उनके शागिदों को यह कहते सुना था कि 'पगला गए हैं? लड़की के साथ जुगलबंदी करा रहे हैं!'। लेकिन गुरु जी असाधारण थे। उन्होंने कभी फर्क महसूस नहीं किया।

27 फरवरी 1983 का दिन मुझे याद है। दिल्ली के कमानी ऑडिटोरियम में मेरा पहला परफॉर्मेंस था। तब मैं 17 साल की थी और मैं ऑल वुमन म्यूजिक फेस्टिवल 'भैरव से सोहनी' में पार्टिशिपेट कर रही थी। तब उस समय की प्रख्यात कलाकार शन्नो खुराना ने महिलाओं के लिए विशेष आयोजन करवाया था।

मेरा पहला परफॉर्मेंस था पर पिता देखने नहीं आए। मेरे मन में डर था कि ऑडिएंस के सामने कैसे बजा सकूंगी। लेकिन सब कुछ बढिया से हो गया।

ऑडिएंस के सामने मैंने बिना किसी परेशानी के 'मिया की टोड़ी' राग बजा दिया। पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा। लोग अचरज में थे कि शहनाई जैसे कठिन साज को कैसे कोई महिला बजा रही है। ये सिलसिला जो शुरू हुआ वो अब तक चल रहा है। हमने वही किया जो गुरु ने कहा।

बिस्मिल्लाह खान साहब ने खाने-पीने को लेकर कभी कोई बंदिश नहीं लगाई। वो खुद मीठा बहुत तेज खाते थे। आइसक्रीम खाते। तीखा खाते थे। इसलिए खाने-पीने पर कोई रोक नहीं थी।

मैंने देश ही नहीं, विदेशों में भी कई परफॉर्मेंस दिए। 1988 में रूस गई वहां मास्को में परफॉर्मेंस दी। बहुत शानदार अनुभव था। छह लोगों का ग्रुप था। अकेली मैं ही महिला थी। लोगों ने काफी प्यार दिखाया। रूसी लोगों ने भी पहली बार किसी महिला को शहनाई बजाते देखा था। 1996 में दुबई में भी इसी तरह कार्यक्रम किया।

एक बार चंडीगढ़ गई वहां किसी कार्यक्रम में शहनाई बजाना था। वहां एक प्रोफेसर पहुंचे हुए थे। उन्होंने मुझे देखा तो कहा कि इतनी दुबली-पतली लड़की शहनाई बजा लेगी क्या!



वो समझ रहे थे कि कोई मोटी-ताजी लड़की स्टेज पर आएगी और शहनाई बजाएगी। खैर, जब मुझे शहनाई बजाते देखा तो खुशी से झूम उठे। उस कार्यक्रम के बाद मुझे शहनाई क्वीन कहा जाने लगा।

1985 में मेरी शादी नरेश कुमार से हुई। विवाह से पहले ही हमने तय कर लिया था कि मैं दिल्ली में इसी घर में रहकर अपना रियाज जारी रखूंगी। पित ने इस फैसले को सपोर्ट किया। वो हमेशा प्रोत्साहित करते रहे। शहनाई सुनने में हमेशा उन्हें रुचि भी रही है। मुझे दो बेटियां हुईं। जैसे मेरा नाम बागेश्वरी एक राग है उसी तरह मेरी बेटियों का नाम कुकुब बिलावली और गमक है। ये दोनों नाम उस्ताद बिस्मिल्लाह खान ने रखा। कुकुब और बिलावली दो राग हैं। गमक स्वरों में विशेष प्रकार के कंपन को कहा जाता है।

बिस्मिल्लाह खान साहब से सीखा कि संगीत से जुड़ना यानी सीधे ईश्वर से साक्षात्कार करना है। ईश्वर की भक्ति होती है। कई बार हमें इसका आभास भी हुआ है। कई बार लोग शादी-ब्याह में शहनाई बजाने के लिए एप्रोच करते हैं और मैं सीधे-सीधे इन्कार कर देती हूं। कभी इस तरह के फंक्शन में नहीं गई। पैसे के लिए मैं शहनाई नहीं बजाती। कला के लिए, साधना के लिए मेरी शहनाई है।

आज भी कम से कम 2 घंटे रियाज करती हूं। दिल्ली में सदर बाजार और पतपड़गंज में घर है। जहां भी जाती हूं साज मेरे साथ होता है।

शहनाई को इंस्ट्रूमेंट नहीं कह सकते। यह ओरिजिनल है। शहनाई हाथ से बनाई जाती है। इसमें फूंकना होता है। इसमें सीने का जोर लगाना पड़ता है। साज को दबाना पड़ता है। कहां कम करना है कहां दबाना है। जब आप शहनाई बजाते हैं तब शरीर का हर भाग इसमें इंगेज होता है क्योंकि सांस पर कंट्रोल करना होता है। दूसरे इंस्ट्रूमेंट में गला या हाथ का इस्तेमाल होता है लेकिन शहनाई की तरह ज्यादा जोर नहीं पड़ता। बनारस में भी और दिल्ली में भी शहनाई बनती है। मेरे पास जो शहनाई है उसे पिता ने दिल्ली में तैयार करवाया था।

पिछले 50 सालों से शहनाई बजा रही हूं। हालांकि दो-तीन सालों से कोविड की वजह से ब्रेक हुआ। अभी दोबारा से शुरू कर रही हं।

शहनाई बजाना अब कोई सीखना नहीं चाहता। बच्चों को यह बहुत टफ लगता है। म्यूजिक जानने-समझने के लिए तो आते हैं लेकिन शहनाई से दूर रहते हैं। जमाना बदल गया है। लड़िकयों में तो कोई नहीं है। अब तो मशीनीकरण है। बस तुरत-फुरत सब कुछ चाहिए। रियाज और साधना अब कौन करना चाहता है। शहनाई का क्रेज है नहीं। सरकार की तरफ से भी उदासीनता है। अगर सरकार की ओर से मौका मिले तो नई पीढ़ी को शहनाई से रू-ब-रू जरूर कराऊंगी।

### सिर्फ खानदान नाकाफी.....

कसौटी सिर्फ और सिर्फ योग्यता ही है। खानदान का ठप्पा परदे तक तो पहुंचा सकता है लेकिन उसके आगे की तकदीर का फैसला सिर्फ दर्शकों के हाथ होता है। वे किस खानदान के जानशीन हैं, यह मायने नहीं रखता"







पृथ्वीराज कपूर से लेकर शोभना समर्थ जैसे श्वेत-श्याम फिल्मों के दौर के बड़े कलाकारों से लेकर समकालीन सुपरस्टारों के बेटे-बेटियों तक फिल्मी खानदानों के वारिसों के अभिनेता-अभिनेत्री बनने का सिलसिला जारी है। हमारी आवरण कथा से जाहिर है. इस वर्ष भी लगभग एक दर्जन से अधिक ऐसे अभिनेता-अभिनेत्रियों का फिल्म इंडस्ट्री में प्रवेश हो रहा है जिनमें अमिताभ बच्चन के नवासे से लेकर शाहरुख खान और श्रीदेवी की बेटियां शामिल हैं। इन नवोदित कलाकारों को न फिल्म निर्माताओं के दफ्तर के चक्कर काटने पड़े हैं और न ही कास्टिंग डायरेक्टर के समक्ष ऑडिशन की कतार में लगना पडा है। उनका रुपहले परदे पर आने का पासपोर्ट रसूखदार फिल्मी परिवारों से संबंध ही है। फिल्म इंडस्टी पर वर्षों से वंशवाद के बढावे का आरोप लगता रहा है, लेकिन पिछले चार दशकों में यह चलन बढा है। अब तो फिल्मी खानदानों की तीसरी-चौथी पीढ़ियां अपनी पारी शुरू करने को तैयार हैं।

अब राजा का बेटा राजा नहीं बनेगा ...अब राजा वहीं बनेगा जो हकदार होगा! वर्ष 2018 में प्रदर्शित बिहार के गणित शिक्षक आनंद कुमार की जिंदगी पर आधारित फिल्म सुपर 30 में नायक हितिक रोशन का बोला यह संवाद काफी लोकप्रिय हुआ था। विडंबना यह है कि परदे पर कहे गए संवाद से इतर बॉलीवुड की हकीकत बिलकुल अलहदा है। मायानगरी में किसी राजा के बेटे का राजा बनना अब भी अस्वाभाविक नहीं समझा जाता है। स्वयं हितिक रोशन फिल्मी परिवार से हैं।

पिछले दिनों अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की मृत्यु के बाद वंशवाद को बढ़ाने के लिए बॉलीवुड को कठघरे में खड़ा किया गया। आरोप लगे कि इंडस्ट्री के कुछ प्रभावशाली लोग सुशांत जैसे कलाकार के आगे बढ़ने में रोड़ा बनते हैं, जिनका किसी फिल्मी खानदान से रिश्ता नहीं होता है। उस घटना ने भीतरी बनाम बाहरी का विवाद खड़ा किया, लेकिन वंशवाद सिर्फ हिंदी सिनेमा उद्योग की देन है यह तथ्यों को नकारने जैसा है। राजनीति से लेकर औद्योगिक घरानों तक हर क्षेत्र में वंशवाद के बीज पनपते रहे हैं। अनिगनत नौकरशाह, जज, वकील, पत्रकार और अन्य पेशेवरों की संतानों ने अपने माता–पिता के पेशे को बगैर किसी विवाद के अपनाया है। कुछ को प्रतियोगिता परीक्षा के माध्यम से सफलता मिली, कुछ को महज परिवार का वारिस होने से।





सियासत में परिवारवाद को प्रश्रय देने का आरोप सबसे पहले कांग्रेस पर लगा। पंडित नेहरू के बाद इंदिरा और इंदिरा के बाद राजीव गांधी के प्रधानमंत्री और पार्टी की कमान अपने हाथों में रखने के कारण कांग्रेस को एक परिवार की पार्टी तक कहा गया। पार्टी के विरोधियों के अनुसार, कांग्रेस में नेहरू-गांधी खानदान से बाहर के किसी व्यक्ति का आगे बढना मृश्किल ही नहीं, नामुमिकन है। नब्बे के दशक में सीताराम केसरी और हाल में मल्लिकार्जुन खडगे के पार्टी अध्यक्ष बनने के बावजूद आरोप लगे कि कांग्रेस में सभी निर्णय एक ही परिवार लेता है। कालांतर में लगभग सभी पार्टियां परिवारवाद के आरोप से बच नहीं पार्डं. यहां तक कि समाजवाद का परचम लहराती पार्टियां भी, जो लोहिया-जयप्रकाश नारायण के वंशवाद के खिलाफ मृहिम से अस्तित्व में आई थीं। आज के दौर में भाजपा सहित शायद ही कोई राष्ट्रीय या क्षेत्रीय दल हो जिसके खिलाफ परिवारवाद के आरोपों को पूरी तरह से खारिज किया जा सकता है। हालांकि यह कहना कतई मुनासिब न होगा कि अपने परिवार या खानदान की वजह से आगे आया हर शख्स नाकाबिल होता है। उनमें से कई तो अपने माता-पिता से आगे निकल जाते हैं। राजनीति के अलावा दूसरे क्षेत्रों में भी ऐसी कई मिसालें हैं। इसके साथ-साथ ऐसे भी हजारों उदाहरण हैं कि सिर्फ पारिवारिक संबंध की बदौलत सफलता की गारंटी नहीं मिलती।



बॉलीवुड के साथ भी यही लागू होता है। किसी फिल्मी खानदान से आने के बाद भी कई कलाकार गुमनामी के अंधेरे में खो गए। उनमें से कई तो दिग्गज कलाकारों की संतान थे। इसके विपरीत, शाहरुख खान जैसे कई ऐसे स्टार बने जिनके परिवार का फिल्मों से कुछ लेना-देना नहीं था। उन्होंने सिर्फ अपनी योग्यता और मेहनत के बल पर अपना मुकाम बनाया। लेकिन आज सिर्फ उनके रुतबे की वजह से यह नहीं कहा जा सकता कि उनके बेटे या बेटी भी सुपरस्टार बन सकते हैं। इसके लिए उन्हें अपनी काबिलियत और हुनर साबित करना पड़ेगा। परिवार के बल पर कोई नया कलाकार फिल्मों में प्रवेश तो पा सकता है, लेकिन अपने आप को साबित करने के लिए उसे उतना ही दमखम दिखाना होगा जितना फिल्म इंडस्ट्री से बाहर से आए किसी संघर्षरत अभिनेता को। अगर ऐसा नहीं होता तो इरफान, मनोज बाजपेयी, पंकज त्रिपाठी, राजकुमार राव सरीखे अभिनेता सफल न होते और हितिक रोशन, रणबीर कपूर और आलिया भट्ट जैसे फिल्मी परिवारों से आने वाले कलाकारों को दर्शक नकार देता। बॉलीवुड में भी सफलता की आखिरी कसौटी सिर्फ और सिर्फ योग्यता ही है, जो परदे पर साफ–साफ झलकती है। खानदान का ठप्पा परदे तक तो पहुंचा सकता है, लेकिन उसके आगे की तकदीर का फैसला सिर्फ दर्शकों के हाथ में होता है। वे किस खानदान के जानशीन हैं, यह मायने नहीं रखता।

## ध्रुव तारे की तरह चमकता श्यामल मोती



व ह दिन कुछ और था, जब फुटबॉल रूपी संसार के स्थानीय देवता सार्वभौमिक सितारे की रोशनी में जैसे अपनी आभा खो चुके थे। 24 सितंबर 1977 के उस तीसरे पहर पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता के ईडन गार्डेन में तकरीबन 75,000 की भीड़ उस 'श्यामल मोती' (ब्लैक पर्ल) की छटा अपनी आंखों में भर लेने और जिंदगी का एहसास भर लेने को उतावली थी कि अपने समकालीनों और और आने वाली पीढ़ियों को कह सकें कि हमने दुनिया के सबसे चमकते सितारे पेले को नंगी आंखों से देखा है। स्टेडियम के बाहर उससे भी ज्यादा लोग उस एहसास को मानो अपने जेहन में भर लेने को उतावले थे, जो नंगी आंखों से नहीं देख सकते थे। शायद दूरदर्शन पर पश्चिम बंगाल के हर कोने और देश के दूसरे हिस्सों के करोड़ों लोगों के लिए जैसे वह तिपहरी छोटे परदे पर आंखें गड़ाए ही गुजरी थी। अलबत्ता, मशहूर क्लब मोहन बागान के साथ न्यूयॉर्क कॉसमस के उस चैरिटी मैच में उनके अपने चोटी के सितारे श्याम थापा, हबीब, अकबर, सुभाष भौमिक, शिवाजी बनर्जी (गोलकीपर), प्रदीप, सुधीर कर्माकर, दिलीप पालित के साथ कॉसमस की ओर से कार्लीस अल्बर्टी जैसे बडे सितारे भी थे। लेकिन पेले के मैदान में दिखते ही जैसे पेले-पेले की उठती-गिरती तरंगें पूरे स्टेडियम को आंदोलित कर रही थीं। स्टेडियम के भीतर और बाहर तुमुल ध्वनि से आकाश गूंज उठता था। हालांकि काफी पहले जर्सी उतार चुके पेले ज्यादा कुछ जादूगरी नहीं दिखा सके और शायद दो दिन की अच्छी बारिश से गीले मैदान में भी खेल कुछ जम नहीं पाया था। पेले के बीमा एजेंटों ने तो उनसे ऐसे मैदान में न उतरने की सिफारिश की थी, मगर पेले ने कहा कि इतने दर्शकों को निराश नहीं कर सकते।

खासकर पश्चिम बंगाल, केरल, गोवा जैसे फुटबॉल प्रेमी प्रदेशों में दीवानगी के आलम के क्या कहने। दरअसल, यह दीवानगी उस अप्रतिम प्रतिभा के प्रति अनोखी श्रद्धांजलि जैसी भी है, जिसने किशोरवय में ही अपने खेल, हुनर और जादुई प्रदर्शन से न सिर्फ दुनिया भर के लोगों को चमत्कृत कर दिया, बल्कि फुटबॉल को हमेशा के लिए बदल दिया। उन्होंने यूरोपीय खिलाड़ियों की तेजी, ताकत और ज्यामितीय खेल को ड्रिब्लिंग, वॉली, हाफ-वॉली, साइकिल किक जैसे हुनर से फुटबॉल को लैटिन अमेरिका के लिए ऐसा औजार बना दिया कि वह यूरोपीय दंभ को रौंदकर अपना परचम ऊंचा लहराए। ठीक उसी तरह जैसे मुक्केबाजी में कैसियस क्ले उर्फ मुहम्मद अली ने गोरों का घमंड चूर करना अपने जीवन का मकसद बना लिया था। कुछ वैसा ही जज्बा पेले ने लैटिन अमेरिका और यूरोप से इतर देशों में भर दिया। पेले के टीम में रहते ब्राजील ने तीन विश्व कप खिताब 1958, 1962 और 1970 का ऐसा रिकॉर्ड बनाया, जिसकी बराबरी संभव नहीं हो पाई। 1958 के विश्व कप में पेले महज 17 साल के थे और 1962 में उन्हें ऐसे टार्गेट किया गया कि चोटिल होने के कारण विश्व कप के ज्यादातर मैचों में खेल नहीं पाए। लेकिन उनका भरा जज्बा

ब्राजील के खिलाड़ियों की जांबाजी का सबब बन गया। ब्राजील के मीनस जेरायस में 23 अक्टूबर 1940 को एडसन अरांतेस डो नासिमेंटो नाम के साथ जन्मी इस लाजवाब प्रतिभा ने 82 वर्ष की उम्र में कैंसर से जूझते हुए 29 दिसंबर 2022 को दुनिया को अलविदा कह दिया। 2022 के विश्व कप में ब्राजील की टीम क्वार्टर फाइनल में बाहर हो गई तो उन्होंने टीम के सबसे चमकदार सितारे नेमार जूनियर को लिखा- 'हार

## <u>फ्रॉक और नथनी पहनकर बड़ा हुआ नाथूराम गोडसे:</u> कभी फल बेचे कभी सिलाई की दुकान खोली, कैसे हुई गांधी से इतनी नफरत

-राकेश तिवारी



नाथूराम गोडसे चर्चा में है। पहली वजह है 26 जनवरी को रिलीज हुई एक फिल्म- 'गांधी-गोडसे एक युद्ध'। दूसरी वजह है 30 जनवरी, जिस दिन महात्मा गांधी की हत्या की गई थी।

समाचार दर्पण 24

नाथूराम परिवार का चौथा बेटा था। उससे पहले घर में 1901,1904 और 1907 में पैदा हुए तीन लड़कों की बचपन में ही मौत हो गई। नाथूराम से पहले 1898 में जन्मीं मथुरा पहली संतान थीं। परिजनों को लड़के की चाह थी और फिर बेटों की लगातार मौत से मां लक्ष्मी और पिता विनायक राव को यह सब कुछ एक दैवीय अभिशाप की तरह लगने लगा। उन्हें लगा कि कोई नकारात्मक शक्ति उनके बेटों को मार दे रही है।

इसके बाद जब नाथूराम का जन्म हुआ तो उन्होंने तय किया कि इसका लालन-पालन लड़की की तरह करेंगे। भाग्य को धोखा देने के लिए उन्होंने नाथूराम की नाक छिदवाई, फ्रॉक पहनाए और तय किया गया कि 12 साल की उम्र तक ऐसे ही रखा जाएगा। हुआ भी यही और फिर 12 साल तक कागजों में रामचंद्र विनायक गोडसे नाम से दर्ज नाथूराम की नाक छिदवा कर उसमें नथ पहनाई गई। इसी वजह से दोस्त और परिजन उसे नाथूराम बुलाने लगे। संयोग से लड़की की तरह पालन-पोषण होने से नाथूराम बच गया और फिर कुछ ही सालों में उसके एक भाई दत्तात्रेय का जन्म हुआ। इसके बाद एक बहन शांता और फिर दो भाई गोपाल और गोविंद का जन्म हुआ। परिवार मानता रहा कि नाथूराम ने श्राप से मुक्ति दिलाई है।

गोडसे बचपन में शर्मीला और चुप रहने वाला लड़का था। कभी-कभी उसे सामान्य बातचीत में भी मुश्किल आती थी, लेकिन उसका एक दावा चौंकाने वाला था। बचपन में उसने दावा किया था कि वो देवी-देवताओं से बात कर सकता है। परिवार में इस बात को किसी ने खारिज नहीं किया क्योंकि उसने अपनी तथाकथित शक्ति से अपनी बहन मथुरा की एक रहस्यमयी बीमारी को ठीक कर दिया।

गांधीजी की हत्या और उसके बाद एक किताब में नाथूराम के भाई गोपाल गोडसे लिखते हैं, 'अपने ससुराल में मथुरा लंबे समय से बीमार थी। काफी इलाज के बाद भी जब वो ठीक नहीं हुई तो उसे बारामती बुला लिया गया और फिर नाथूराम ने अपनी बहन को ठीक करने के लिए एक दुर्लभ पूजा की... और फिर मथुरा ठीक हो गई।' परिवार ने इसे चमत्कार माना और नाथूराम आगे भी ऐसी पूजा करता रहा। इस पूजा के लिए एक कमरा तैयार किया जाता था। नाथूराम उस कमरे की एक दीवार के पास फर्श पर गाय के गोबर से लीपता था। इसके बाद कालिख को तेल में मिलाकर हथेली के आकार का चक्र बनाता था। वहां दिया जलाकर गोडसे पहले पूजा करता था और फिर कालिख को ध्यान से देखता था।

गोपाल गोडसे ने लिखा है, 'पूजा के बाद आसपास के लोग उससे अपनी चिंता से संबंधित सवाल पूछते थे और गोडसे के मुंह से जो जवाब आता था उसे देवी का जवाब मान लिया जाता था।

हालांकि, बाद के सालों में गोडसे की धर्म में आस्था कम होती गई। उसकी हमेशा इच्छा रही कि मर्दाना दुनिया में उसके विचारों को भी जगह मिले। बाद के जीवन में यही कुंठा उसके फैसलों का आधार बनी।

गोडसे ने सार्वजनिक रूप से अपने बचपन का जिक्र बहुत खुल कर नहीं किया। गांधी की हत्या के बाद जांचकर्ताओं को अपने जीवन के बारे में बहुत कुछ नहीं बताया। जांचकर्ताओं ने जो रिपोर्ट बनाई, उसके 92 पेज में से मात्र दो पन्ने ही उसके प्रारंभिक जीवन से संबंधित थे और उसमें भी किशोरावस्था के बाद की बातें ज्यादा थीं।

डाक विभाग में नौकरी कर रहे गोडसे के पिता के ट्रांसफर बहुत होते थे। प्राइमरी में पढ़ाई के बाद गोडसे के पिता का मुंबई के किसी ग्रामीण इलाके में ट्रांसफर हुआ। उनका मन था कि गोडसे अंग्रेजी पढ़े इसलिए उसे मौसी के घर भेज दिया गया। यहां उसके जीवन में जरूरी बदलाव आए। मौसी के घर में आजादी कम थी और परिवार में जो अटेंशन मिलती थी वो भी कम हो गई। धीरे-धीरे उसने पूजा पाठ भी कम कर दिया और 16 की उम्र आते-आते उसने 'दैवीय शक्तियों' का प्रयोग करना पूरी तरह से बंद कर दिया।

हाईस्कूल की पढ़ाई के दौरान उसके नए दोस्त बने। 1928 के अंत तक अपनी 10वीं की परीक्षा के कुछ माह पहले उसने मौसी का घर छोड़ दिया और किराए के कमरे में रहने लगा। यहां उसका पढाई में मन कम लगता था। दोस्तों के साथ समय बिताने के अलावा वो तैराकी करता था। गोडसे ने बाद में कहा कि वो शांत पानी में बिना रुके दो मील यानी करीब 3218 मीटर तक तैर सकता है। हाईस्कूल की परीक्षा में वो इंग्लिश के पेपर में फेल हो गया और डिग्री नहीं हासिल कर सका। गोडसे ने बाद में अपने कई बयानों में बताया कि उसे स्कूल से नफरत हो गई थी। इसी वजह से वह घर वापस आ गया। साल 1929 में गोडसे के पिता का प्रमोशन हुआ और आखिरी पोस्टिंग रत्नागिरी में मिली।

यह वो समय था जब गांधी का जनसंपर्क कार्यक्रम तेज हो रहा था। गांधी संयुक्त प्रांत के ढाई महीने के लंबे दौरे पर निकले थे। संयुक्त प्रांत यानी आज का UP और उत्तराखंड। गांधी शहरों और गांवों में रुकते थे। छात्रों, महिलाओं और आम जनता को खादी पहनने और कांग्रेस में शामिल होने का आग्रह करते थे।

इस यात्रा ने माहौल बदल दिया और रत्नागिरी समेत देश के बाकी हिस्से में कांग्रेस के नेता सक्रिय हो गए। जगह-जगह सभाएं आयोजित कीं और देश में स्वाधीनता के लिए नए सिरे से चौराहों पर बहस होने लगी।

गोडसे के लिए यह अलग तरह का अनुभव था जैसा उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया था। रत्नागिरी में भी कांग्रेस के नेता सिक्रय हुए तो गोडसे उनके साथ आ गया। उसने विरोध सभाओं में हिस्सा लिया। गोडसे ने अपने बयान में कहा है, 'जब छात्रों को स्कूल और कॉलेज का बहिष्कार करने का आह्वान किया जाने लगा तो मैंने भी हाईस्कूल की परीक्षा में दोबारा न बैठने का फैसला लिया।'

गोडसे धीरे-धीरे काफी सक्रिय हो गया और फिर भाषण देने में हाथ आजमाया। इसके बाद वो अपने इलाके में कांग्रेस द्वारा आयोजित विरोध सभाओं का नियमित वक्ता बन गया। गांधी की हत्या के बाद ट्रायल के दौरान अपने बयान में गोडसे ने दो-तीन बार पुलिस द्वारा हिरासत में लिए जाने का भी जिक्र किया है।

इन सबके बीच 1930 में गोडसे की मुलाकात विनायक दामोदर सावकर से हुई। वो अंडमान की सेल्यूलर जेल में अपनी सजा पूरी कर के रत्नागिरी आए थे। इस बात का कोई साफ ब्योरा नहीं मिलता कि नाथूराम गोडसे और सावकर क्यों मिले और दोनों की मुलाकात किसने कराई? गोडसे के भाई गोपाल के अनुसार, संयोग से सावरकर जब रत्नागिरी आए तो वहीं पर रुके जहां हम रहते थे। बाद में वो उसी गली के दूसरे छोर पर दूसरे घर में शिफ्ट हो गए। गोडसे धीरे-धीरे काफी सक्रिय हो गया और फिर भाषण देने में हाथ आजमाया। इसके बाद वो अपने इलाके में कांग्रेस द्वारा आयोजित विरोध सभाओं का नियमित वक्ता बन गया। गांधी की हत्या के बाद ट्रायल के दौरान अपने बयान में गोडसे ने दो-तीन बार पुलिस द्वारा हिरासत में लिए जाने का भी जिक्र किया है।

...और फिर सावरकर के संपर्क में आया नाथूराम इन सबके बीच 1930 में गोडसे की मुलाकात विनायक दामोदर सावकर से हुई। वो अंडमान की सेल्यूलर जेल में अपनी सजा पूरी कर के रत्नागिरी आए थे। इस बात का कोई साफ ब्योरा नहीं मिलता कि नाथूराम गोडसे और सावकर क्यों मिले और दोनों की मुलाकात किसने कराई? गोडसे के भाई गोपाल के अनुसार, संयोग से सावरकर जब रत्नागिरी आए तो वहीं पर रुके जहां हम रहते थे। बाद में वो उसी गली के दूसरे छोर पर दूसरे घर में शिफ्ट हो गए।

नाथूराम और सावरकर के संबंधों पर गोपाल गोडसे ने लिखा है, 'सावरकर के रत्नागिरी आते ही दोनों में काफी करीबी संबंध हो गया था।' गोडसे जब सावरकर के संपर्क में आया तब उसकी उम्र 19 साल थी। इधर लंबी कद काठी वाले सावरकर विदेश से पढ़े थे और सेल्यूलर जेल में एक दशक तक कैद में रहने के बाद लौटे थे। गोडसे को सावरकर की बातें और व्यक्तित्व ने प्रभावित किया। आगे पांच सालों तक दोनों की कोई मुलाकात नहीं हुई, लेकिन गोडसे फिर भी सावरकर के विचारों से प्रभावित होता रहा।

रत्नागिरी में सावरकर लगातार अपने हिंदुत्व के सिद्धांत के साथ लोगों से मिलते रहे और गोडसे को ये सब कुछ बहुत प्रभावित करता था। गोडसे ने अपने बयान में बताया कि सावरकर ने जब जाना कि मैंने हाईस्कूल की परीक्षा छोड़ दी है तो वो काफी नाराज हुए और मुझे अपना फैसला बदलने के लिए मनाने की कोशिश कई बार की, यह कहते हुए कि मेरा पढ़ाई जारी रखना कितना महत्वपूर्ण है।

सावरकर ने गोडसे को किताबें और आजादी की लड़ाई से संबंधित साहित्य दिया। पढ़ने की आदत डलवाई। धीरेंद्र कुमार झा अपनी किताब Gandhis Assassin the making of Nathuram Godse में लिखते हैं कि गोडसे सावरकर के लेख पढ़ता था और अपने नोट्स बनाता था। गोपाल गोडसे ने अपने संस्मरण में लिखा है, 'एक बार वह घर पर सावरकर की लिखी '1857 का स्वतंत्र्य समर' लेकर आया, जिसे वह रात के वक्त मां, पिता और मुझे पढ़कर सुनाता था।'

इधर गांधी ने अप्रैल 1930 में डांडी मार्च कर नमक कानून तोड़ दिया था और देश भर में आंदोलन शुरू हो गए थे। उस वक्त तक गोडसे सावरकर से काफी प्रभावित हो चुका था और उसने कांग्रेस से दूरी बना ली थी। रत्नागिरी में यह लगभग दो सालों तक चला और उधर परिवार की स्थिति भी खराब होती रही। 1933 में गोडसे के पिता और परिवार के एकमात्र कमाऊ इंसान विनायक राव रिटायर हो गए। पेंशन से घर चलाना मुश्किल होने लगा तो परिवार को लेकर रत्नागिरी से 175 किलोमीटर दूर सांगली चले गए।

चूंकि भाई बहन स्कूल जा रहे थे, ऐसे में अब गोडसे के लिए नौकरी करना जरूरी था। उसने फल बेचना शुरू किया, लेकिन सफल नहीं हो सका। इसके बाद वो अपनी बड़ी बहन मथुरा के पास इटारसी चला गया और वहां कई नौकरियों में हाथ आजमाया। साल 1934 में पिता की बीमारी के कारण उसे वापस सांगली आना पड़ा। यहां आकर उसने सिलाई का काम सीखा और चरितार्थ उद्योग नाम से एक दुकान खोली।

चूंकि भाई बहन स्कूल जा रहे थे, ऐसे में अब गोडसे के लिए नौकरी करना जरूरी था। उसने फल बेचना शुरू किया, लेकिन सफल नहीं हो सका। इसके बाद वो अपनी बड़ी बहन मथुरा के पास इटारसी चला गया और वहां कई नौकरियों में हाथ आजमाया। साल 1934 में पिता की बीमारी के कारण उसे वापस सांगली आना पड़ा। यहां आकर उसने सिलाई का काम सीखा और चरितार्थ उद्योग नाम से एक दुकान खोली।

पहली बार हिंदू महासभा और गोडसे के संबंध का जिक्र 1938 में आता है। हिंदू महासभा ने हैदराबाद के निजाम के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। महासभा का कहना था कि निजाम को दी जा रही रियायतें हिंदुओं की स्वतंत्रता और संस्कृति के खिलाफ हैं। ये आंदोलन 1939 तक चला और गोडसे ने इसमें सिक्रय भूमिका निभाई। इस आंदोलन के लिए गोडसे को एक साल की जेल हुई।

20 जनवरी को पहवा ने जैसे ही विस्फोट किया, एक महिला ने उसे देख लिया और वो पकड़ा गया। वहां से दत्तात्रेय आप्टे, गोडसे और अन्य सहयोगी भाग निकले। 23 जनवरी तक भूमिगत रहने के बाद गोडसे ने तय किया कि वो गांधी को खुद ही गोली मारेगा। फिर 27 जनवरी को दत्तात्रेय आप्टे और नाथूराम गोडसे दिल्ली आए, फिर गोडसे रात की ट्रेन से ग्वालियर पहुंचा।

यहां अपने विश्वासपात्र दत्तात्रेय सदाशिव परचूरे की मदद से पिस्तौल का इंतजाम किया और 29 जनवरी को दिल्ली लौट आया। अगले ही दिन शाम पांच बजे बिड़ला भवन के मैदान में गांधी की प्रार्थाना सभा से ठीक पहले उसने सामने से गांधी के सीने में तीन गोलियां दाग दीं। इसके बाद गोडसे का कोर्ट ट्रायल चला और उसे 15 नवंबर 1949 को फांसी दे दी गई।

### PM मोदी ने की साल की पहली 'मन की बात'



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात प्रोग्राम में देशवासियों को संबोधित किया। उन्होंने पद्म पुरस्कार पाने वाले लोगों के जीवन की कहानियां बताईं और लोगों से भी उनके जीवन की प्रेरक कहानियां पढ़ने की अपील की। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि लोकतंत्र हमारी रगों में है, हमारी संस्कृति में है। सदियों से यह हमारे कामकाज का भी एक अभिन्न हिस्सा रहा है। स्वभाव से हम एक डेमोक्रेसी सोसाइटी हैं।

मन की बात कार्यक्रम का यह 97वां एपिसोड है, जो इस साल का पहला एपिसोड है।

PM मोदी ने कहा कि पद्म पुरस्कार विजेताओं की एक बड़ी संख्या आदिवासी समुदायों और आदिवासी समाज से जुड़े लोगों से आती है। आदिवासी जीवन शहर के जीवन से अलग है, इसकी अपनी चुनौतियां भी हैं। इन सबके बावजूद आदिवासी समाज अपनी परंपराओं को बचाने के लिए हमेशा आतुर रहता है। टोटो, हो, कुई, कुवी और मांडा जैसी आदिवासी भाषाओं पर काम करने वाली कई महान हस्तियों को पद्म पुरस्कार मिल चुके हैं। यह हम सबके लिए गर्व की बात है। सिद्दी, जारवा और ओंगे आदिवासियों के साथ काम करने वालों को इस बार भी पुरस्कृत किया गया है। आदिवासियों के साथ काम करने वालों को इस बार भी पुरस्कृत किया गया है।PM ने कहा कि गणतंत्र दिवस समारोह में अनेक पहलुओं की काफी प्रशंसा हो रही है। 26 जनवरी की परेड़ के दौरान कर्तव्य पथ का निर्माण करने वाले श्रमिकों को देखकर बहुत अच्छा लगा। इस परेड में पहली बार हिस्सा लेने वाली महिला ऊंट सवार और CRPF की महिला टकडी की भी काफी सराहना हो रही है।

#### -मोहन द्विवेदी

डॉ अंबेडकर ने बौद्ध भिक्षु संघ की तुलना भारतीय संसद से की थी। उन्होंने उसे एक ऐसी संस्था बताया था, जहां प्रस्ताव, संकल्प, कोरम और वोटों की गिनती के लिए कई नियम थे। बाबासाहेब का मानना था कि भगवान बुद्ध को इसकी प्रेरणा उस समय की राजनीतिक व्यवस्थाओं से मिली होगी।

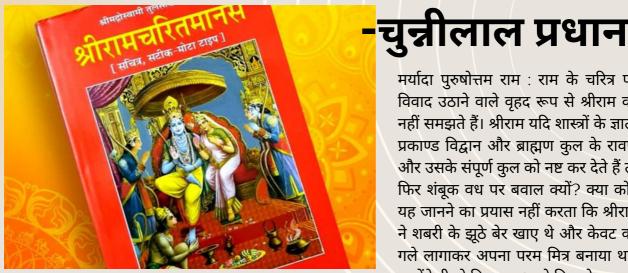
PM मोदी ने कहा कि मैं एक दिलचस्प किताब का जिक्र करूंगा। इसका नाम इंडिया- द मदर ऑफ डेमोक्रेसी है। इसमें कई बेहतरीन कहानियां हैं। इसको सभी को पढ़ना चाहिए।

PM बोले कि मुझे खुशी है कि देश के हर कोने में, जहां भी G-20 समिट हो रही है, वहां मिलेट्स से बने पौष्टिक, और स्वादिष्ट व्यंजन उसमें शामिल होते हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि देश का ये प्रयास और दुनिया में बढ़ने वाली मिलेट्स की डिमांड हमारे छोटे किसानों को कितनी ताकत देने वाली है। इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स की ऐसी शानदार शुरुआत के लिए और उसको लगातार आगे बढ़ाने के लिए देशवासियों को बधाई देता हं।

योग दिवस और हमारे विभिन्न तरह के मोटे अनाजों या मिलेट्स में काफी कुछ कॉमन है। इस बदलाव का बहुत बड़ा प्रभाव भी दिख रहा है। जिस तरह लोगों ने व्यापक स्तर पर सिक्रय भागीदारी करके योग और फिटनेस को अपने जीवन का हिस्सा बनाया है, उसी तरह मिलेट्स को भी लोग बड़े पैमाने पर अपना रहे हैं। लोग अब इसको अपने खानपान का हिस्सा बना रहे हैं।

बीच के लिए जाना जाने वाला टूरिस्ट हब गोवा आज किसी और वजह से भी चर्चा में हैं। उसका कारण है पणजी में हुआ पर्पल फेस्ट। मुझे पूरा विश्वास है कि एक्सेसिबल इंडिया के हमारे विजन को साकार करने में इस प्रकार के अभियान बहुत ही कारगर साबित होंगे। पर्पल फेस्ट को सफल बनाने के लिए हिस्सा लेने वाले सभी लोगों को बधाई देता हूं।पि<mark>छले साल के 25 दिसंबर</mark> को हुए आखिरी मन की बात कार्यक्रम में PM मोदी ने साल भर की उपलब्धियों को बताया था। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर श्रद्धांजलि दी थी। इसके साथ ही PM मोदी ने कहा कि हमने भारत से स्मॉलपॉक्स, पोलियो जैसी बीमारियों को खत्म करके दिखाया है। सबकी कोशिश से कालाजार नाम की ये बीमारी अब तेजी से खत्म हो रही है। इसी भावना से हमें भारत को 2025 तक टीबी मुक्त करना है। आपने देखा होगा कि बीते दिनों जब टीबी मुक्त भारत अभियान शुरू हुआ, तो हजारों लोग मरीजों की मदद के लिए आगे आए।

# रामचरित मानस पर क्यों उठ रहे है विवाद,



श्रीरामचरितमानस को लेकर पहले भी विवाद होता रहा है लेकिन वर्तमान में बिहार के शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर और समाजवादी पार्टी के एमएलसी और उत्तर प्रदेश के पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य ने इस पर विवादित बयान दिए हैं। हालांकि विवाद का कारण रामचरित मानस के कुछ चौपाई है, लेकिन इन चौपाई के अर्थ का अनर्थ करने और रामचरित मानस को समग्र रूप से नहीं समझने के कारण ही यह गलतफहमी उपजती रही है। आओ जानते हैं। इससे जुडे तथ्य।

रामचरित मानस को मुगल काल में श्री तुलसीदासजी ने लिखा था। यह ग्रंथ वाल्मीकि रामायण, आनंद रामायण और कबंद रामायण सहित कई रामायणों के अध्ययन पर आधारित अवधी भाषा में लिखा गया ग्रंथ है। इस ग्रंथ में 7 काण्ड है। बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड। हालांकि उत्तरकाण्ड को लेकर विवाद है। माना जाता है कि वाल्मीकि रामायण में यह बाद में जोड़ा गया तो मानस में भी यह बाद का काण्ड ही माना जाता है। जबिक वाल्मीकि रामायण लंकाकाण्ड पर समाप्त हो जाती है।

तुलसीदास गोस्वामी कृत रामचरितमानस का उत्तरकांड : इसमें मंगलाचरण, भरत विरह तथा भरत-हनुमान मिलन, अयोध्या में आनंद, श्री रामजी का स्वागत, भरत मिलाप, सबका मिलनानन्द, राम राज्याभिषेक, वेदस्तृति, शिवस्तुति, वानरों की और निषाद की विदाई, रामराज्य का वर्णन, पुत्रोत्पति, अयोध्याजी की रमणीयता, सनकादिका आगमन और संवाद, हनुमानुजी के द्वारा भरतजी का प्रश्न और श्री रामजी का उपदेश, श्री रामजी का प्रजा को उपदेश (श्री रामगीता), पुरवासियों की कृतज्ञता, श्री राम-वशिष्ठ संवाद, श्री रामजी का भाइयों सहित अमराई में जाना, नारदजी का आना और स्तुति करके ब्रह्मलोक को लौट जाना, शिव-पार्वती संवाद, गरुड़ मोह, गरुड़जी का काकभुशुण्डि से रामकथा और राम महिमा सुनना, काकभुशुण्डि का अपनी पूर्व जन्म कथा और कलि महिमा कहना, गुरुजी का अपमान एवं शिवजी के शाप की बात सुनना<mark>, रुद्राष्ट्रक, गुरुजी का शिवजी से अपराध</mark> क्षमापन, शापानुग्रह और काकभुशुण्डि की आगे की कथा, काकभुशुण्डिजी का लोमशजी के पास जाना और शाप तथा अनुग्रह पाना, ज्ञान-भक्ति-निरुपण, ज्ञान-दीपक और भक्ति की महानु महिमा, गरुड़जी के सात प्रश्न तथा काकभुशुण्डि के उत्तर, भजन महिमा, रामायण माहात्म्य, तुलसी विनय और फलस्तुति और रामायणजी की आरती का वर्णन मिलता है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम : राम के चरित्र पर विवाद उठाने वाले वृहद रूप से श्रीराम को नहीं समझते हैं। श्रीराम यदि शास्त्रों के ज्ञाता प्रकाण्ड विद्वान और ब्राह्मण कुल के रावण और उसके संपूर्ण कुल को नष्ट कर देते हैं तो फिर शंबूक वध पर बवाल क्यों? क्या कोई यह जानने का प्रयास नहीं करता कि श्रीराम ने शबरी के झूठे बेर खाए थे और केवट को गले लागाकर अपना परम मित्र बनाया था।

उन्होंने ही तो गिद्ध का अपने पिता के सामान श्राद्ध किया था। वे कोल, भील, किरात, आदिवासी, वनवासी, गिरीवासी, कपिश अन्य कई जातियों के साथ जंगल में रहे और उन्हीं के दम पर उन्होंने रावण को हराया भी था तब मात्र शंबूक वध पर आप कैसे यह

ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के

मान सकते हैं कि उनमें जातिवादी भावना

अधिकारी॥3॥- सुंदरकाण्ड भावार्थ : इस प्रकार संपूर्ण चौपाई का अर्थ यह हुआ कि ढोलक, गवांर, वंचित, जानवर <mark>और नारी, यह पांच पूरी तरह से</mark> जानने के विषय हैं। इन्हें जानें बगैर इनके साथ व्यवहार करने से सभी का अहित होता है। ढोलक को <mark>अगर सही से नहीं बजाया</mark> जाय तो उससे कर्कश ध्वनि निकलती है। अतः ढोलक पूरी तरह से जानने या अध्ययन का विषय है। इसी तरह अनपढ व्यक्ति आपकी किसी बात का गलत अर्थ निकाल सकता है। अतः उसके बारे में अच्छी तरह से जानकर ही उसको कोई बात समझाना चाहिए। वंचित व्यक्ति को भी जानकर ही आप किसी कार्य में उसका सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। <mark>अन्यथा कार्य की असफलता</mark> पर संदेह रहेगा। इसी प्रकार पशु हमारे किसी व्यवहार, <mark>आचरण, क्रियाकलाप</mark> या गतिविधि से भयभीत या आहत हो जाते हैं और न चाहते हुए भी वे भयभीत होकर हमला कर सकते हैं।



असुरक्षा का भाव उन्हें कुछ भी करने पर विवश कर सकता है। अतः पशु को भी भलीभांति जानकर ही उसके साथ व्यवहार करना चाहिए। इसी प्रकार जब तुलसीदासजी ने नारी शब्द का उपयोग किया तो वे भलिभांती जानते थे कि नारी मां, बहन और बेटी भी होती है। लेकिन लोग सिर्फ पत्नी के अर्थ में ही इसे लेते हैं। तुलसीदासजी यहां कहना चाहते हैं कि नारी की भावना को समझे बगैर उसके साथ आप जीवन यापन नहीं कर सकते। ऐसे में आपसी सूझबूझ काफी आवश्यक होती है।

कई विद्वान यह भी मानते हैं कि इस चौपाई में बदलाव किया है, यह प्रक्षेप है। असली चौपाई में शूद्र नहीं क्षुब्द है और नारी नहीं रारी है। यानी ढोल, गवार, क्षुब्द पशु, रारी है यह सब ताड़न का अधिकारी।

ढोल = बेसुरा ढोलक गवार= गवांर व्यक्ति क्षुब्द पशु= आवारा पशु जो लोगों को कष्ट देते हैं। रार = कलह करने वाले लोग दूसरी चौपाई:

पूजिह विप्र सकल गुण हीना, पूजिह न शूद्र गुण ज्ञान प्रवीणा।।- 3/34/2

तुलसीदासजी की इस चौपाई का इस तरह गलत अर्थ निकाला जाता है- ब्राह्मण चाहे कितना भी ज्ञान गुण से रहित हो, उसकी पूजा करनी ही चाहिए, और शूद्र चाहे कितना भी गुणी ज्ञानी हो, वो सम्माननीय हो सकता है, लेकिन कभी पूजनीय नहीं हो सकता।।

इस चौपाई के अर्थ को समझने के लिए पहले समझना होगा कि विप्र कौन? तुलसीदासजी ने विप्र शब्द का प्रयोग किया है ब्राह्मण का नहीं। मनु स्मृति की निम्नलिखित चौपाई से विप्र का अर्थ समझेंगे-

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् भवेत द्विजः। वेद पाठात् भवेत् विप्रःब्रह्म जानातीति ब्राह्मणः।।

अर्थात – व्यक्ति जन्मतः शूद्र है। संस्कार से वह द्विज बन् सकता है। वेदों के पठन-पाठन से विप्र हो सकता है। किंतु जो ब्रह्म को जान ले, वही ब्राह्मण कहलाने का सच्चा अधिकारी है।सही अर्थ: यानी यदि विप्र अर्थात वेद-पठन करने वाला व्यक्ति और ब्रह्माण यानी ब्रह्म को जानवे वाला व्यक्ति। अब यदि विप्र ने भले ही उस सारे वेद ज्ञान को आत्मसात नहीं किया है, सारे गुणहीन हो लेकिन वह पढ़ा-लिखा है इसीलिए वह पूज्जनीय है। शुद्र वेद प्रवीणा का अर्थ हुआ ऐसा व्यक्ति जो सारी किताबे पढ़-पढ़ के प्रवचन बांचता रहता है उसका मर्म नहीं समझता है और वह उसका अर्थ नहीं जानता है। फिर भी वो उसका दम्भ करता है पांडित्य दिखाता रहता है। ऐसे लोग पूज्जनीय नहीं है। दरअसल आजकल लोग जातिवाद के चलते चौपाई और श्लोकों के गलत अर्थ निकालने लगे हैं। उसके संदर्भ को काटकर वे उसके भाव को नहीं पकड़ते हैं। प्राचीनकाल के गुरु कुल में हर जाति और संप्रदाय का व्यक्ति पढ़कर उच्च बनता था। वेदों को लिखने वाले ब्रह्मण नहीं थे। वाल्मीकि रामायण किसी ब्राह्मण ने नहीं लिखी। महाभारत और पुराण लिखने वाले वेद व्यासजी निषाद कन्या सत्यवती के पुत्र थे।



### 'राजस्थान में कांग्रेस की 2018 में वापसी मेरे पिछले काम के कारण हुई'- CM गहलोत

-सुरेंद्र प्रताप सिंह



राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पार्टी नेता और पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट को जवाब देते हुए कहा कि राज्य में कांग्रेस की 2018 में सत्ता में वापसी उनके पिछले कार्यकाल में किए गए काम के कारण हुई। साथ ही उन्होंने इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव में 156 सीटें जीतने का लक्ष्य भी रखा। लंबे समय से गहलोत के साथ सत्ता की खींचतान में फंसे पायलट ने हाल ही में कहा था कि 2013 से 2018 तक जब वह प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे उस दौरान पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं के संघर्ष के कारण कांग्रेस की सत्ता में वापसी हुई।

## '2013 की हार मोदी लहर के कारण हुई थी'

पायलट ने बार-बार कहा है कि कांग्रेस विधायकों की संख्या जो 2013 में घटकर 21 रह गई थी, पार्टी आलाकमान द्वारा उन्हें राज्य में प्रदेश कांग्रेस कमेटी का प्रमुख बनाए जाने के बाद ही बढ़ी। गहलोत ने पायलट का नाम लिए बिना कहा कि 2013 की हार काफी हद तक 'मोदी लहर' के कारण हुई थी, लेकिन राज्य में बीजेपी सरकार के छह महीने के कार्यकाल में लोगों को अपनी गलती का एहसास हो गया था।

मुख्यमंत्री गहलोत ने कहा, "वो जो माहौल बनता है, वो भी एक बड़ा कारण होता है सरकार वापस आने का। बाकी कारण तो होते ही हैं हमारे कार्यकर्ता, हमारी पार्टी संघर्ष करती है, सड़कों पर उतरती है। हालांकि, (जनता के) दिमाग में था कि पिछली बार हमने 2013 में सरकार बदलकर गलती कर दी और इसीलिए इस बार पहले ही हवा बन गई थी कि सरकार आनी चाहिए और अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री बनना चाहिए।"

मुख्यमंत्री गहलोत ने कहा, "वो जो माहौल बनता है, वो भी एक बड़ा कारण होता है सरकार वापस आने का। बाकी कारण तो होते ही हैं हमारे कार्यकर्ता, हमारी पार्टी संघर्ष करती है, सड़कों पर उतरती है। हालांकि, (जनता के) दिमाग में था कि पिछली बार हमने 2013 में सरकार बदलकर गलती कर दी और इसीलिए इस बार पहले ही हवा बन गई थी कि सरकार आनी चाहिए और अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री बनना चाहिए।"

गहलोत ने दावा किया कि बीजेपी के पास उनकी सरकार के खिलाफ बोलने के लिए कोई मुद्दा नहीं है और लोगों में कोई सत्ता विरोधी भावना नहीं है और जनता सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों से खुश है। उन्होंने कहा कि देश भर में चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा जैसी राज्य योजनाओं के बारे में बात की जा रही है और कर्मचारी पुरानी पेंशन योजना को फिर से शुरू करने से खुश हैं।

# कुंवारी.....

#### -इस्मत चुग़ताई



उसकी सांस फूली हुई थी। लिफ़्ट ख़राब होने की वजह से वो इतनी बहुत सी सीढ़ियाँ एक ही साँस में चढ़ आई थी। आते ही वो बेसुध पलंग पर गिर पड़ी

और हाथ के इशारे से मुझे ख़ामोश रहने को कहा।
मैं ख़ुद ख़ामोश रहने के मूड में थी। मगर उस की
हालत-ए-बद देखकर मुझे परेशान होना पड़ा।
उसका रंग बेहद मैला और ज़र्द हो रहा था। खुलीखुली बेनूर आँखों के गिर्द स्याह हलक़े और भी गहरे
हो गए थे। मुँह पर मेक-अप न था। खासतौर पर
लिपस्टिक ना होने की वजह से वो बीमार और बूढ़ी
लग रही थी। मुझे मा'लूम हो गया कि मेरे बताए
डाक्टर का ईलाज तसल्ली बख़्श साबित हुआ।
उसका पेट अंदर को धँसा हुआ था और सीना सपाट
हो गया था। मुझे मा'लूम हुआ कि इस क़त्ल की मैं भी
कुछ ज़िम्मेदार हूँ। मगर में डाक्टर का पता ना बताती
तो कोई और बता देता। बिन बुलाए मेहमान को एक
दिन निकाला तो मिलना ही था।

"एक मश्वरा लेने आई हूँ..." सांस क़ाबू में आते ही उसने कहा।

"जुम्मा जुम्मा आठ दिन बीते नहीं और मुर्दार को फिर मश्वरों की ज़रूरत आन पड़ी," मैंने चिड़ कर सोचा, मगर निहायत ख़ंदा–पेशानी से कहा, "लो, ज़रूर लो। आजकल बहुत मश्वरे मेरे दिमाग़ में बज–बजा रहे हैं।" "आपा, में शादी कर लूँ?" उसने बड़ी लजाजत से पूछा। गोया अगर मैंने इजाज़त ना दी तो वो कुँवारी अरमान भरी मर जायेगी। "मगर तुम्हारा शौहर?"

"मौत आए हरामी पिल्ले को। उसे क्या ख़बर होगी।"

"ये भी ठीक कहती हो। भला तुम्हारे शौहर को तुम्हारी शादी की क्या ख़बर होगी," मैंने सोचा। "मगर तुम्हारी शादी के चर्चे अख़बारों में होंगे। आख़िर इतनी बड़ी फ़िल्म स्टार हो।"

"फ़िल्म स्टार की दुम में ठेंगा।" अल्लाह गवाह है मुझे नहीं मा'लूम कि ये गाली हुई कि नहीं। मदन एक सांस में तीन गालियाँ बकने की आदी है, मुझे तो उसकी ज़बान से निकला हुआ हर लफ़्ज़ गाली जैसा सुनाई देता है। मगर ये हक़ीक़त है कि सिवाए चंद आम-फहम गालियों के ये किल-कारियाँ मेरे पल्ले नहीं पडतीं।

"भई एक बात मेरी समझ में बिलकुल नहीं आती," मैंने बात की लगाम एक दम दूसरी सड़क पर मोड़ दी। "तुम शादीशुदा हो तो तुम्हारा बच्चा हरामी कैसे हुआ?""ओह, आपा। अल्लाह का वास्ता, कभी तो समझा करो। कम्बख़्त शादी तो शब्बू दो साल का था तब हुई थी।"

"शब्बू के बाप ही से ना?" मैंने <mark>सहम कर पूछा।</mark>

"ऊंहूं, तुम्हें याद तो कुछ रहता नहीं। बताया तो था... वो कम्बख़्त...""अच्छा... याद आ गया... वो तुम्हें गृहस्ती का शौक़ चर्राया था," मैंने अपनी कुंद ज़हनी पर शर्मिंदा हो कर कहा।

"भूसा चर्राया था। माँ के ख़सम ने <mark>धंदा कराना शुरू कर</mark> दिया।" माँ का ख़सम रिश्ते में क्या हुआ?

"उंह, छोड़ो इस ना-मुराद शादी के तज़िकरे को। नई शादी का ज़िक्र करो। अल्लाह रखे कब कर रही हो। कौन है वो ख़ुशनसीब।

"सुंदर," और वो क़ह–क़हा मार कर क़ालीन पर <mark>लोट गई।</mark>

एक ही सांस में उसने सब कुछ बता डाला। कब इश्क़ हुआ, कैसे हुआ, अब किन मदारिज से गुज़र रहा है। सुंदर उस का किस बुरी तरह दीवाना हो चुका है। किसी फ़िल्म में किसी दूसरे हीरो के साथ लव सीन नहीं करने देता और वो ख़ुद भी उसे किसी दूसरी हीरोइन के साथ रंग-रलियाँ नहीं मनाने देती।

"आपा, ये फ़िल्म वालियाँ बड़ी छिनाल होती हैं। हर एक से लंगर लड़ाने लगती हैं," उसने ऐसे भोलेपन से कहा जैसे वो ख़ुद बड़ी पारसा है। "आपा, कोई चटपटी सी कहानी लिक्खो। हम दोनों उसमें मुफ़्त काम करेंगे। मज़ा आ जाएगा उसने चटख़ारा लिया।

"सेंसर की..." उसने मोटी सी गाली सेंसर की क़ैंची पर दाग़ी। "शादी के बाद काम थोड़ी करूँगी। सुंदर कहता है अपनी दुल्हन को काम नहीं कराऊँगा। चम्बोर् में बंगला ले लेंगे ख़्वाबों के झूले में पींगें लेते हुए कहा और एक दफ़ा तो मुझे भी यक़ीन हो गया कि उसकी दुनिया बस जाएगी। चम्बोर् बंगले में वो बेगम बनी बैठी होगी। बच्चे उसे चारों तरफ़ से घेरे होंगे।

"अम्माँ खाना। अम्माँ खाना," वो चिल्लाऐंगे।

"अहे ज़रा सब्र करो... आलू तो गल जाने दो," वो कफ़गीर से उन्हें मारेगी। तब बच्चों का बाप मुस्कुराएगा, "बेगम क्यों मारती हो। अभी बच्चे हैं।"

"बस एक लौंडा हो जाएगी फिर साले को शादी करनी पडेगी।"

"तो क्या अभी शादी नहीं हुई?" ख़्वाबों की बस्ती से लौट कर मैंने पूछा। मेरा दिल बैठ गया। जैसे मेरी अपनी कुँवारी की बारात दरवाज़े से लौट गई।"नहीं आपा। हरामज़ादा है बड़ा चालाक। ना जाने क्या करता है।" वो देर तक सुंदर को फांसने की तरकीबें पूछती रही। ना जाने क्यों ये बात उस के दिल में बैठ गई थी कि अगर बच्चा हो गया तो सुंदर के पैर में बेड़ियाँ पड़ जाएंगी।

"और फिर भी उसने शादी न की तो?"

"करेगा कैसे नहीं. उस का तो <mark>बाप भी करेगा।"</mark>

"ख़ैर, बाप का ज़िक्र फ़िज़ूल है<mark>, वो मर भी चुका।"</mark>

"हराम–ज़ादे की छाती पर चढ़ <mark>कर ख़ून ना पी जाऊँगी।"</mark>

"शब्बू के बाप की छाती पर चढ़ करके क्यों ना ख़ून पी गईं?""जब मेरी उम्र ही किया थी। उल्टी चोर सी बन के बैठ गई। बस तुम कोई ऐसी तरकीब बताओ कि साले की एक ना चले और…" जो तरकीबें वो मुझसे पूछ रही थी उनसे मुझे वहशत हो रही थी।

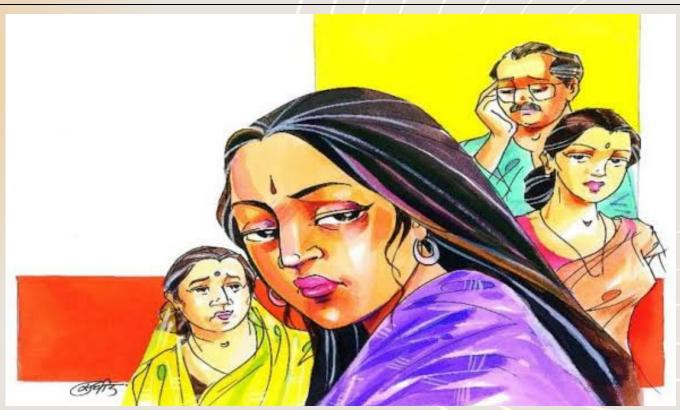
मदन कई बार सुंदर को लेकर मेरे हाँ आई। सुंदर अपने नाम की तरह हसीन और नौ–उम्र था, मदन से किसी तरह बड़ा ना मा'लूम होता था। नया–नया कॉलेज से आया तो भूके बंगाली की तरह चौ–मुखे इश्क़ लड़ाने शुरू कर दिए। इसी छीन– झपट में मदन उसे उड़ा लाई। अच्छे घराने का क़ह–क़हा बाज़ और बातूनी लड़का पहली ही दफ़ा घर में ऐसा बे–तकल्लुफ़ हो गया जैसे बरसों से आता जाता है। उसे देखकर ये अंदाज़ा लगाना मुश्किल ना था कि क्यों मदन उसे दिल से बैठी। उसकी सोहबत में एक लम्हा भी उदास नहीं गुज़रता था। मदन जैसी पिटी-पिटाई, ग़म-नसीब लड़की के लिए ज़रा सी नरमी भी छलका देने को काफ़ी थी। वो सुंदर के हर जुमले पर बे-तहाशा क़ह-क़हे लगाती। वो बात पर नहीं, उस के चेहरे के उतार चढ़ाओ पर, लबों की जुंबिश पर मस्हूर हो कर खिल-खिला पड़ती। मुसर्रत की उछलती कूदती मौजें उसे झकोल डालतीं। सुंदर के लब हिलते और वो क़ह-क़हा मारती, पानी पीती होती तो उच्छू लग जाता, खाना खाती होती तो मुँह का निवाला सामने बैठने वाले के ऊपर छिड़क देती।

वो दोनों ना जाने अपना घर छोड़कर मेरे ही हाँ कुलेलें करने क्यों आते थे, बच्चों जैसी शरारतें करते, कला–बाज़ियां करते, कभी रूठते, कभी मनाते। उन्हें देखकर मुझे बकरी के दो खिलंदड़े बच्चे याद आ जाते जो पराए खेत में फुदकने आ जाते हैं। क्या दन–दनाता हुआ इश्क़ था दोनों का, बे परों के हवा में उड़े जाते थे।

जंगली हिरनियों जैसे चौकड़ियाँ भरते हुए प्यार ने मदन की काया पलट कर दी। वो एक दम बेहद हसीन और जाज़िब-ए-नज़र बन गई। जिल्द के नीचे दिए रौशन हो गए। सोई हुई आँखें जाग उठीं, हज़ारों जादू सरगोशियाँ करने लगे। सपाट सीना खिल उठा। कूल्हे लहराने लगे। सुंदर से कुश्तियाँ लड़-लड़ कर वो फुर्तीली बन गई।

सुंदर की और मदन की जोड़ी बन गई, जिन फिल्मों में वो सुंदर के साथ ना थी, उन्हें डफ़राना शुरुअ कर दिया। सेट से बड़े मार्के के सीन मेक-अप रुम में होने लगे। वो फिल्में जो आधी हो गई थीं, चीथड़ा हो गईं, मदन ने पहली बार किसी नौ-जवान को दिल दिया था। सब कुछ भूल कर वो उसी में डूब गई।

सुंदर उसके बड़े लाड सहता। उसके छिछोर पर हँसता। उसके उजड़े हुए घर में जान डाल देता। नानी को अम्माँ अम्माँ कह कर मस्का लगाता। ख़ाला से बैठ कर गप्पें मारता। भाई को व्हिस्की पिलाता। बच्चों के साथ धमा-चौकड़ी मचाता। उसे मदन के जिस्म से मतलब था। उसकी आमदनी इसी तरह मुँह बोले रिश्तेदारों के तन्नूर में झोंकी जाती थी। शब्बू को वो बहुत प्यार करता... मदन ने इस बदनसीब बच्चे का हाल उसे सुना दिया था। वो उसे बेटा कह कर गोद में बिठाकर घंटों प्यार की बातें किया करता।



"आपा, शब्बू नगोड़े को बेटा कहता है। बस तुम ही समझ लो क्या बात है," वो झूम कर कहती और मेरे कानों में मदन की बारात के ढोल गूँजने लगते। देखने में सुंदर कैसा ओबाली सा था। मगर बच्चों के मुआमले में उसका रवय्या हैरत–अंगेज़ था। आते ही बच्चे उसे मक्खीयों की तरह घर लेते। उसकी जेबें क्या थीं, उमर–अय्यार की ज़ंबील थीं, रंगीन पेंसिलें, पटाख़ों की डिब्बियाँ, काग़ज़ पर उतारने की तस्वीरें, चॉकलेट, मीठी गोलीयाँ, ना जाने क्या इल्ला बिल्ला निकाल कर बांटने लगता। एक दिन बच्ची ने मेरी सेंट की शीशी तोड़ दी। मैंने उसे मारना चाहा तो मेरे हाथों से उसे झपट कर ले गया।

"आप मारेंगी तो उसे अपने घर ले जाऊँगा वो उसे कंधे पर बिठाकर बोला।"

"हाथ तोड़ दिए जाऐंगे मारने वालों के। ये लीजीए अपनी शीशी," उसने जेब से नई मुँह-बंद वैसी ही शीशी निकाल दी। "मगर इन्हें पूरी शीशी नहीं देंगे। आधी थी तो आधी मिलेगी उसने शीशी खोल कर ख़ूब बच्चों के बिसांदे कपड़ों और मैली हथेलियों पर छिड़की। आधी रह गई तो मेरे सामने डाल दी। जब वो बच्चों को बटोर कर दूसरे कमरे में चला गया तो मदन ने रोकर मेरे शाने पर सर डाल दिया।

"आपा, ऐसे ऊट-पटांग आदमी के साथ कोई प्यार कैसे ना करे?"और फिर मदन की ज़िंदगी ने एक नया झटका खाया। सुंदर के घर से तार आया कि माँ सख़्त बीमार है, फ़ौरन आ जाओ। मदन साथ जाने के लिए मचल गई। उसने अपने तरकश के सारे तीर इस्तेमाल कर डाले। शाम से ही उस के लिए व्हिस्की की बोतल लेकर पहुंची। उसे धुत कर दिया। बड़े नाज़ुक लम्हों में साथ ले जाने की कसमें दीं। मगर सुंदर टस से मस ना हुआ। वो सारी रात जागती रही। ना सोई, ना सोने दिया। मगर सुबह होते ही परिंदा सारी तितलियाँ झटक कर उड़ गया।

एरोड्रोम से सीधी मेरे ऊपर नाज़िल हुईं। मुझे इस क़िस्म के मरियल आशिक़ों से बड़ी कोफ़्त होती है। मगर उसे यूं तबाह-हाल देखकर मेरा जी पसीज गया। जैसे बरसों की बीमार। एक ही रात में आँखों के गर्द स्याह हल्क़े। मुँह पर फटकार। ये उसे हो क्या गया है, मैं देर तक सोचती रही। मैं क्यों इस कम्बख़्त के बारे में सोचूं। दुनिया में कितने बड़े-बड़े मसले हैं जिनमें जी उलझा हुआ है। फिर आख़िर में इस का ख़्याल क्यों करती हूँ। मैं ये सब कुछ क्यों लिख रही हूँ। मदन इस लायक नहीं। मुझे अपना जी हल्का करने के लिए ही सही, इस बोझ को बाँटना होगा। कितने दिन से जब मैं क़लम उठाती हूँ, मदन का ख़्याल मुझसे आकर कहता है, "मैं ज़िंदा हूँ। मेरे सीने में दिल धड़क रहा है। मेरी रगों में ख़ून दौड़ रहा है... राय दो... मुझे बताओ, में क्यों हूँ और कब तक रहूंगी..." अच्छा है, मेरा क़लम एक बार मदन को उगल दे। फिर मितलियाँ आनी बंद हो जाएंगी।"आपा, एक तार लिक्खो," उसने थोड़ी देर सूखी-सूखी आहें भर कर कहा।

"कैसा तार?"

"कम सून, डाइंग... यानी जल्दी आओ, मर रही हूँ।""मगर अभी तो वो पहुंचा भी ना होगा," मैंने टालना चाहा। फिर जान को आ गई तो लिख दिया। डाइंग ना लिखा। शाम को हाँपती काँपती आई, बड़ी शरमाती हुई तिकए में मुँह छूपा कर हँसने लगी। मैंने कहा, "खैरीयत?" "तार लिख दो।"

"सुबह तो लिखा था।"

"सुबह मुझ नसीबों जली को कहाँ मा'लूम था," वो फिर शरमाई। "उबकाईयाँ आ रही हैं आपा लीमूँ मंगवा दो।" "ओहो... ये बात है मुबारक हो।" मेरे सर से बोझ सा उतर गया, ये बस फटकी कामयाब रही। "डाक्टर के पास गईं?""वहीं से तो आ रही हूँ। डाक्टर हरामी पिल्ला क्या जाने। कहता है दो दिन चढ़ जाने से कुछ नहीं होता... कुछ नहीं होता का बच्चा... आपा कपड़े वग़ैरा तो सिलवा दोगी... हंक, हंक। भई हमसे तो नहीं पलेगा। तुम पाल दोगी वो..." ठुनकने लगी। मैंने हामी भर ली।

"तो फिर तार लिक्खो ना।"

"क्या लिखूँ?"

"लिक्खो... सन बोर्न। कम सून।"

"गधी हो तुम। <mark>अभी कहाँ से सन बोर्न?"</mark>

"अच्छा तो सन बोर्न होने वाला लिख दो।"

"चलो स्टर्न, उसके आने का इंतेज़ार करो, और क्या मा'लूम। शायद लड़की हो।"

"वाह, लड़की छिनाल काहे को होगी। मेरी तरह सड़ने को। मेरा जी कहता है लड़का ही होगा," फिर थोड़ी देर सोच कर एक दम बोली...

"मर जाये अल्लाह करे।"

"कौन?" मैंने चौंक कर पूछा।"सुंदर की माँ, उल्लू की पट्ठी। बीमार वीमार कुछ नहीं। ससुरी ने अपने यार को बुलाने के लिए ढोंग रचाया है," उसने निहायत पुर–मग़ज़ क़िस्म की फूलदार गालियाँ टिकाईं।

"अहमक़ हो तुम, कैसे मा लूम?" "अरे में ख़ूब जानती हूँ इन मय्यत पीटियों को।" जब से मदन की ज़िंदगी में सुंदर आया था उसने गालियाँ बकना बंद कर दी थीं। सुंदर के प्यार ने रिसते ज़ख़्मों पर फाए रखकर ग़लाज़त का मुँह बंद कर दिया था। उसकी आँख ओझल होते ही कच्चे ज़ख़्मों के मुँह खुल गए। पीप बहने लगी। उसके मुँह से फिर वही गालियाँ सुनकर मेरा जी बैठ गया। मारे ग़ुस्से के रिन पटाख़ों की लड़ी बन गई।

"उसका ताल्लुक़ है।"

"किसका?"

"उसकी अम्माँ बहिनियाँ का, सच्ची आपा, बहुत सी औरतें ऐसी होती हैं बचपन ही..."

"लानत हो तुम्हारी ज़बान पर।"

"अल्लाह क़सम आपा... हमारे पड़ोस में एक बीबी रहती थीं। अपने सगे भाई से..."मैंने उसे रोक दिया। "लिल्लाह तफ़सीलों में ना जाओ। मेरा क़लम पेट का बड़ा हल्का है। कल कलां को मुँह से बात निकाल बैठा तो लोग मुझे उलाहना देंगे। दूसरे दिन मातम-कुनाँ फिर टूट पड़ीं। कल जैसे डाक्टर का कहना ही ठीक निकला। दिन चढ़ गए थे, सो उतर गए। साथ-साथ मदन की कमान भी उतर गई। ऐसी बिलक-बिलक कर रोईं जैसे जवान बेटा जाता रहा हो। ये औरत है या लतीफ़ा। कल जिस बला के ख़ौफ़ से बौखलाई फिर रही थी आज उस बला की आरज़ू में जान दिए देती हैं। लगीं मुझसे तरकीबें पूछने। भला मेरे पास कोई जादू की छड़ी है जो चूहे को घोड़ा बना दूँ। डाक्टर ने कुछ इशारा तो किया था कि आइन्दा ऐसी मुसीबत से पाला नहीं पड़ेगा। मैं उसे बावजूद कोशिश के न बता सकी कि सुंदर को फ़ासने वाली चाल के पैर मफ़लूज हो चुके हैं।

सुबह ,शाम मदन ने तारों की डाक बिठा दी। काम पर उसने लात मार दी। एक प्रोडयूसर ने कोर्ट में ले जाने की धमकी दी तो वो नाक पर ढेर सा मरहम थोप कर पड़ गई। मैं भी मरहम की मिक़्दार देख कर हिल गई... गई नाक, मैंने सोचा। मगर जब प्रोड्यूसर चला गया तो मज़े से नाक पोंछ कर हँसने लगी।

"मगर मुझे बेवक्रूफ़ क्यों बनाया तुमने..." मैंने चिड़ कर कहा और चली आई।

अख़बारों में इस्क़ात की ख़बरें छपने लगीं। मदन ने ज़रा शरमाकर तसदीक़ कर दी, मैंने पूछा, "ये क्यों?""सूअर को पता चलेगा तो बहुत कुढ़ेगा। मैं कह दूँगी, मैं समझी तुम छोड़कर चले गए। बदनामी के डर से गोलीयाँ खालीं। मर्द बच्चा है कुछ तो दिल को ठेस लगेगी।

एक दिन हवास–बाख़्ता रोती हुई आई।

"तुम ने मुझे नहीं जाने दिया। ये देखो," वो अख़बार जिसमें सुंदर की मंगनी की ख़बर थी, दिखाकर लड़ने लगी।

"चेह ख़ुश, मैंने कब मना किया," मैं ने जल कर कहा। "जाओ मेरी बला से जहन्नुम में।" और वो शाम के हवाई जहाज़ से जहन्नुम की तरफ़ उड़ गइ।ग्यारह बजे रात को जब वो सुंदर के घर पहुंचीं तो घर में सिवाए बूढ़े दादा और तोते के कोई ना था। सब के सब सुंदर की कोई फ़िल्म देखने गए थे। सुंदर के दादा फ़िल्म लाईन के वैसे ही ख़िलाफ़ थे। उन्हें मा'लूम था कि इन फ़िल्म वालों के चाल चलन कुछ यूँ ही वर्क़ से होते हैं, फूंक मारी और ग़ायब। आँखें फाड़ कर वो मदन को घूरने लगे। मदन बंबई से गर्म कपड़े भी लेकर नहीं गई थी। भूक अलग लग रही थी।बारह बजे के बाद सुंदर बहन भाईयों की टोली में हँसता क़ह–क़हे लगाता आया तो मदन रो पड़ी। क्या वो भी कभी यूं ख़ानदान में घुल मिल कर उनकी अपनी बन सकेगी। उसके भी देवर जेठ होंगे, ननदें और देवरानियाँ होंगी।



# NEW BROTHERS BAKERS & RESTAURANT

PHONE - 8052442127/6388418753







DISCOVER A NEW LEVEL
OF TASTE

FULWARIYA ROAD, NEAR THANA GATE
BHATPARRANI, DEORIA UTTAR
PRADESH



kvishal748@gmail.com



**पृष्ठ 31** 2 फरवरी से 17 फरवरी 2023

